एकीभाव विधान

(सर्व रोग निवारक ऋषभदेव विधान)

श्री आदिनाथ भगवान, धर्मतीर्थ-कचनेर

संपादन

दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव

रचनाकार

आर्यिका आस्थाश्री माताजी

श्री वादिराज सूरि

एकीभाव विधान

आशीर्वाद

गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव
वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव

संपादन

प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव

रचनाकार

गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी

प्रकाशक

श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन

विषय सूची

क्र.सं.	विषय	पृ. सं.
1.	आशीर्वाद–ग.ग.आचार्य कुंथुसागरजी	7
2.	शुभाशीर्वाद एवं शुभकामनायें–आचार्य कनकनन्दीजी	8
3.	सम्पादकीय–आशीर्वाद – आचार्य गुप्तिनन्दीजी	10
4.	जैन धर्म में भावना का महत्त्व – मुनि महिमासागरजी	15
5.	धर्म कर्म निवर्हणम् – मुनि सुयशगुप्तजी	17
6.	भादो भी होगा भक्ति का सावन – मुनि चन्द्रगुप्तजी	18
7.	स्व कथ्यम् – गणिनी आर्यिका क्षमाश्री माताजी	19
8.	तीर्थंकर पद की हेतू, सोलहकारण भावना– गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी	20
9.	विधान मंडल	37
10.	विनय पाठ	40
11.	पूजा आरम्भ	41
12.	नित्यमह पूजन–गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी	46
13.	श्री चौबीस तीर्थंकर पूजन–आचार्य गुप्तिनंदीजी	50
14.	ऋद्धि मंत्र	53

एकीभाव विधान

106.	आदिनाथ भगवान की स्तुति	424
107.	एकीभाव पूजा विधान –श्री आदिनाथ पूजा	425
108.	विधान प्रारम्भ	429
109.	समुच्चय जयमाला	442
110	प्रशस्ति	445
111.	आदिनाथ भगवान की आरती	446
112.	एकीभाव विधान (आदिनाथ विधान) की आरती	447

आशीर्वाद

पुण्य ही जीव की सद्गति कराता है, सद्गति से मनुष्य को मोक्ष प्राप्त होता है, सच्चा सुख उसी को कहते हैं। संसारी जीव को सच्चे सुख के लिये ही प्रयत्न करना चाहिए, आचार्यों ने इसीलिये देवपूजा का विधान गृहस्थों के लिये अनिवार्य किया है। सद् गृहस्थ को प्रतिदिन जिनपूजा करना चाहिए। द्रव्यसहित भावपूजा करना चाहिये, पूजा पुण्यानुबंधी पुण्य कमाने के लिये है। **आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी** ने त्रिकाल चौबीसी और पंचकल्याणक विधान लिखे हैं और **गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी** ने सोलहकारण, दशलक्षण, पंचमेरु, नंदीश्वर, रविव्रत, मोक्षशास्त्र, णमोकार, एकीभाव एवं चंदन षष्ठी विधान आदि आठ विधानों को लिखा है, व्रत विधान करने से जीव को परम्परा से मुक्ति प्राप्ति होती है, गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी का परिश्रम कब सार्थक होगा, जब सद्ग्रहस्थ व्रत करें, विधान करें। आप सभी विधानों को करके अवश्य पुण्य लाभ उठावें, ऐसा मेरा कहना है। गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी को, प्रकाशक को मेरा आशीर्वाद।

-ग.ग. कुन्थुसागर

शुभाशीर्वाद एवं शुभकामनायें

राग – सुवर्ण पात्री मंगल आरती.. मराठी राग (चौपाई)

(तीर्थंकरों का सामान्य वर्णन)

आत्म उद्धारक विश्व प्रबोधक अनन्त ज्ञान सुख वीर्यवान्।
अनन्त दर्श के स्वामी भगवन्, घातीकर्म नाशक अरहन्॥ टेक॥

सोलह भावना बल पर बनते तीर्थंकर केवली महान्।
अतिशय युक्त पञ्चकल्याणों से होते हैं प्रभु शोभितवान्॥1॥

गर्भ से पूर्व होती रत्नवृष्टि माता देखती स्वप्न महान्।
देवों के द्वारा होती पूजित जिनेश माता पुण्य से जान॥2॥

जन्म होने पर होता अभिषेक पाण्डुक शिला पर महान्।
हजार आठ कलश के द्वारा देव करे उत्सव महान्॥3॥

राजकुमार राजा चक्री बन करते प्रजापालन श्रीमान्।
कोई बाल ब्रह्मचारी होते कोई विवाह भी करते जान॥4॥

बाह्य अन्तःकरणों से जब होता वैराग्य सौभाग्य जान।
लौकान्तिक करते अनुमोदन दिव्य पालकी से वनगमन॥5॥

सिद्धों को करके सुमिरन पञ्चमुष्टि केशलोंच करें महान्।
अन्तरंग-बाह्य परिग्रह तजकर निर्ग्रन्थ रूप धरे महान्॥6॥

गर्भ से होते त्रिज्ञानधारी क्षायिक सम्यग्दृष्टि महान्।
दीक्षा से होता मनःपर्यय भी चौंसठ ऋद्धि अलौकिक जान॥7॥

बाह्य-आभ्यन्तर तपस्या करते सात्विक आहार लेते जान।
इसी से होते पञ्च आश्चर्य आहारदान का गुण बखान॥8॥

शुक्ल ध्यान से श्रेणी आरोहण करके घाती कर्म करें हनन।
अनन्त चतुष्टय धारी बनकर साक्षात् तीर्थेश जान॥9॥

समवशरण की रचना होती देवकृत अति मनोहर/(चमत्कार)।
गन्धकुटी बाहर सभा मध्ये विराजमान होते भगवान्/(जिनवर)॥10॥

सर्वभाषामयी श्रीवाणी खिरे श्रवण करे पशु देव नर।
गणधर उसे गुन्थित करते द्वादश जिनवाणी का सार॥11॥

हमारी संघस्था उदीयमाना कवियित्री **गणिनी आर्यिका श्री आस्थाश्री** के द्वारा रचित **'सोलहकारण, दशलक्षण, पंचमेरु, नंदीश्वर, रविव्रत, तत्त्वार्थ सूत्र, णमोकार, एकीभाव एवं चंदन षष्ठी विधान'**, ये अनेक विधान लिखे हैं उनका सदुपयोग करके विश्व मानव सातिशय पुण्यार्जन करें एवं परम्परा से मोक्ष प्राप्त करें ऐसी मेरी शुभकामनायें हैं। **गणिनी आर्यिका आस्थाश्री** भी रत्नत्रय की साधना एवं सोलहकारण भावना के द्वारा स्व-पर विश्वकल्याण करते हुये स्वात्मोपलब्धि करें ऐसा शुभाशीर्वाद एवं शुभकामनायें सह-

-आचार्य कनकनंदी
खाखड (उदयपुर) राज.
28-5-2012

सम्पादकीय-आशीर्वाद

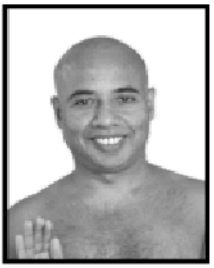

सोलहकारण दिव्य भावना, तीर्थंकर पद की दातार।
दशलक्षण आतम के लक्षण, करते पापों का परिहार॥
उनको भायें निशदिन ध्यायें, करने निज आतम उद्धार।
उनके धारक श्री जिन मुनि को, करते वंदन बारम्बार॥
पंचमेरु और नंदीश्वर के, जिनवर का हम करते ध्यान।
रविव्रत के श्री पार्श्वनाथ से, हो जाये मेरा उत्थान॥

भावनायें अनेक प्रकार की होती हैं। जैसे–सद्भावना, दुर्भावना, प्रशस्त भावना, अप्रशस्त भावना। प्रशस्त भावनाओं में बारह भावना, मेरी भावना, सोलहकारण भावनाओं आदि का समावेश होता है। इन सभी भावनाओं में सोलहकारण भावना सातिशय पुण्य भावना है।

जीवकाण्ड, कर्मकाण्ड आदि जैन आगम के अनुसार यदि कोई संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक, भव्य पुण्यात्मा जीव किसी तीर्थंकरादि केवली या श्रुतकेवली के पादमूल में विधिबद्ध ढंग से इन सोलहकारण भावनाओं का चिंतवन करता है तो वह तीर्थंकर पुण्य प्रकृति का बंध कर सकता हैं।

इसके अतिरिक्त षोडशकारण की व्रत कथा के अनुसार मुनियों के प्रति दुर्व्यवहार करने का फल भोगने वाली कुरूपा निंदनीया कालभैरवी कन्या ने पश्चात्ताप के साथ इस व्रत को सम्पन्न किया। जिससे मुनि निंदा के पाप से बचकर उसी कन्या ने आगे स्त्रीलिंग को छेदन कर, सीमंधर तीर्थंकर के महान् पद को प्राप्त किया। अर्थात् मुनि निंदा के प्रायश्चित्त हेतु भी यह व्रत करना चाहिए।

वर्ष में तीन बार आने वाला यह पर्व हमें दिशाबोध देता है कि तीर्थंकर कैसे तीर्थंकर बने ?

हमारे आदर्श क्या हो ? साधारण मानव भी आगे कैसे तीर्थंकर बन सकता है।

इसी प्रकार दशलक्षण धर्म, आत्मा का धर्म है। जैन संस्कृति में दशलक्षण पर्व का विशेष महत्त्व है। पर्वों में महापर्व, पर्वाधिराज पर्यूषण को माना गया है। पर्यूषण पर्व भी वर्ष में तीन बार आता है किन्तु भाद्रपद मास में आने वाला दशलक्षण पर्व जैन समाज में विशेष रूप से मनाया जाता है। सम्पूर्ण भारतवर्ष के जैन धर्मावलम्बी श्रावक चाहे देश में हो या विदेश में रहे। वह अनिवार्य रूप से भाद्रपद मास के पर्यूषण पर्व पर

अपनी सांसारिक क्रियाओं से निवृत्त होकर ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए दस दिनों तक नियम संयम के साथ दशलक्षण धर्म की महा–आराधना करते हैं।

धूमधाम से गीत, संगीत, वाद्ययंत्रों के साथ पूजा विधान करते हैं। इसलिए समय–समय पर हमारे आचार्यों, मुनिराजों, आर्यिका माताजी व श्रावकों ने कभी प्राकृत भाषा में, कभी संस्कृत में कभी ढुढ़ारी भाषा में तो कभी हिन्दी में छोटे या बड़े रूप में अनेक प्रकार से सोलहकारण व दशलक्षण विधान की रचना की है।

इसी श्रृंखला में **आर्यिका आस्थाश्री माताजी** ने अपनी भक्ति काव्य कला का सद्पयोग करते हुए **'सोलहकारण, दशलक्षण, पंचमेरु, नंदीश्वर, रविव्रत, तत्त्वार्थ सूत्र, णमोकार, एकीभाव एवं चंदन षष्ठी विधान'** को लिखा है। माताजी एक ऐसी पुण्यात्मा है जिन्होंने मात्र तेरह वर्ष की बाल्यावस्था में घर, परिवार त्याग कर ''आर्यिका विशालमति माताजी'' के मार्गदर्शन में अपनी अध्यात्म यात्रा प्रारम्भ की। तत्पश्चात् जैनागम का गहन अध्ययन करने के लिये **'वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनन्दीजी गुरुदेव'** का पावन सान्निध्य प्राप्त किया। धर्मपिता आचार्य गुरुदेव ने जहाँ आपको शास्त्राभ्यास कराया।

वहीं मर्यादा श्रमणमोत्तम आचार्य श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव ने अपनी प्रथम शिष्या की आर्यिका दीक्षा अपने दीक्षा गुरु **गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुंथुसागरजी गुरुदेव** से करवायी और इस तरह ब्रह्मचारिणी कुमारी लीला 17 फरवरी, 1997 को गुजरात प्रांत के अहमदाबाद नगर में **आर्यिका आस्थाश्री** बन गई। सन् 1994 से निरन्तर संघ में रहते हुए आपकी अध्यात्म साधना निरन्तर चलती रही।

दोहा– पंचमेरु के जिन भवन, उनमें जिन भगवान।
उनको ध्याऊँ रात–दिन, दर्शन दो भगवान॥

जैन संस्कृति में पंचमेरु का महत्त्वपूर्ण स्थान है। ढाई द्वीप में पाँच मेरु होते हैं। जम्बूद्वीप के बीचोंबीच प्रथम सुमेरु पर्वत है। धातकी खण्ड द्वीप के पूर्व और पश्चिम भाग में विजय व अचल मेरु हैं। पुष्करार्द्ध द्वीप के पूर्व व पश्चिम में मन्दर व विद्युन्माली मेरु हैं।

इनमें से प्रथम सुदर्शन मेरु की ऊँचाई एक लाख चालीस योजन है व अन्य चार मेरु पर्वतों की ऊँचाई चौरासी हजार योजन बतायी है। इन पाँच मेरुओं में (1) भद्रशाल (2) नन्दन (3) सौमनस (4) पाण्डुक नामक चार वन हैं। चारों वनों की चारों दिशाओं में चार–चार जिनालय हैं। प्रत्येक जिनालय में 500 धनुष ऊँची 108–108 जिन प्रतिमायें हैं। इस प्रकार एक मेरु के चारों वनों के 16 चैत्यालयों

की 108-108 जिन प्रतिमायें मिलाने पर एक मेरु की 1728 जिनप्रतिमायें होती हैं। जैन शास्त्रों में पाँचों मेरु की कुल आठ हजार छह सौ चालीस जिन प्रतिमायें बनायी हैं। उनमें सभी प्रतिमाओं में प्रत्येक के समीप सर्वाण्ह यक्ष, सनत्कुमार यक्ष व श्रीदेवी और श्रुतदेवी की प्रतिमा भी शाश्वत स्थित है। प्रत्येक जिन प्रतिमा अष्ट महाप्रतिहार्य व अष्ट मंगल द्रव्य से विभूषित है।

पाँचों मेरु के पाण्डुक वनों की चार विदिशाओं में चार-चार शिलायें हैं। उनके क्रम से (1) पाण्डुक शिला (2) पाण्डुकम्बला शिला (3) रक्ता शिला और (4) रक्तकम्बला शिला नाम हैं। इन शिलाओं पर निर्धारित (भरत, ऐरावत, पूर्व, पश्चिम विदेह) क्षेत्र के बाल तीर्थंकरों का जन्माभिषेक होता है।

हम इसे प्रथम सुमेरु पर्वत से समझते हैं। सुमेरु के पाण्डुक वन की ईशान दिशा में स्थित पाण्डुक शिला पर भरत क्षेत्र के तीर्थंकरों का, आग्नेय दिशा में स्थित पाण्डुकम्बला शिला पर पश्चिम विदेह के तीर्थंकरों का, नैऋत्य दिशा में स्थित रक्ता शिला पर ऐरावत क्षेत्र के तीर्थंकरों का और वायव्य दिशा में स्थित रक्तकम्बला शिला पर पूर्व विदेह के तीर्थंकरों का अभिषेक होता है। इसी प्रकार अन्य क्षेत्र के मेरु पर्वत के विषय में जानना चाहिए।

उन शिलाओं पर एक-एक सिंहासन और दो-दो भद्रासन होते हैं। जिनमें से सिंहासन पर बाल तीर्थंकर को विराजमान करके दोनों भद्रासनों पर सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी व ईशान इन्द्र-इन्द्राणी बैठकर 1008 कलशों में भरे क्षीरसागर के फल से बाल तीर्थंकर का जन्माभिषेक करते हैं। वह क्षीर सागर का जल भी दूध के समान स्पर्श-रस-गंध-वर्ण वाला होता है। जैनाचार्यों ने 1008 कलश 8 योजन (96 किमी.) गहरे, चार योजन (48 किमी.) चौड़े व मुख 1 योजन (12 किमी.) का बताया है। ऐसे बड़े-बड़े 1008 कलशों से श्री बाल तीर्थंकर भगवान का जन्माभिषेक होता है। इसी प्रकार अन्य चार मेरु पर्वतों व धातकी खण्ड द्वीप व पुष्करार्ध द्वीप के विषय में जानना चाहिए। पाँचों मेरु का सुन्दर-सा वर्णन 'श्री तिलोयपण्णत्ति', 'श्री त्रिलोक सार', 'श्री हरिवंश पुराण' आदि ग्रन्थों में विस्तार से मिलता है।

पंचमेरु को लक्ष्य करके ही पंचमेरु पुष्पाञ्जलि व्रत किया जाता है। इस व्रत के प्रभाव से एक ब्राह्मण पुत्री ने क्रम से देवपद, मनुष्य होकर चक्रवर्ती पद व आगे उसी भव से सिद्धपद प्राप्त किया।

प्रत्येक वर्ष में तीन बार आने वाले दशलक्षण पर्व की पंचमी से नवमी तक यह व्रत किया जाता है। व्रत में शक्ति अनुसार उपवास या एकाशन करके पंचमेरु का विधान किया जाता है।

दोहा– जम्बुद्वीप से आठवाँ नन्दीश्वर हितकार।
उसके सब जिनबिम्ब को वन्दन बारम्बार॥

संघ में 'श्री तिलोय पण्णत्ति ग्रन्थराज'' का स्वाध्याय चल रहा है उसमें मध्यलोक के आठवें नन्दीश्वर द्वीप का विस्तृत वर्णन पढ़ा। पढ़कर मन में अत्यानंद हुआ। उस समय ही **गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी** ने उनके द्वारा सृजित नंदीश्वर विधान की नवीन रचना अवलोकनार्थ दी। उसमें तिलोय पण्णत्ति को आधार लेकर माताजी ने 'नन्दीश्वर विधान' में नंदीश्वर द्वीप का, वहाँ–वहाँ के वैभव और पूजा विधि का बहुत सुन्दर वर्णन किया है। नंदीश्वर व्रत कथा से इस व्रत विधान की महिमा ज्ञात होती है। व्रत कथा के अनुसार कुबेर दत्त वैश्य और सुन्दरी सेठानी के पुत्र श्रीवर्मा ने नन्दीश्वर व्रत का विधिवत पालन किया। जिसके प्रभाव से वे स्वर्गादिक सुख भोगकर आगे हरिषेण चक्रवर्ती बने तथा उसी भव में पुनः व्रतकर आगे मुनि बने वा मोक्ष गये। व्रत के प्रभाव से अनंत वीर्य आगे चक्रवर्ती बना। जयकुमार सेनापति भगवान वृषभदेव के 72वें गणधर बने। इस व्रत की महिमा से कोटिभट् श्रीपाल का कोढ़ मिटा तथा आगे सर्वसुखों के साथ मोक्ष सुख भी प्राप्त हुआ। इत्यादि अनेक उदाहरण प्रथमानुयोग ग्रन्थों में इस व्रत की महिमा बतलाते हैं। प्रस्तुत विधान में 52 अर्घ और 6 पूर्णार्घ हैं।

दोहा– पार्श्वनाथ भगवान हैं, सर्व सुखों की खान।
उनका रविव्रत श्रेष्ठ है, देता सिद्धी निधान॥

भगवान पार्श्वनाथ का पावन जीवन चरित्र समतामूलक है। उनकी दस भव की साधना क्षमा की साधना है। साहस व धैर्य की साधना है। भगवान पार्श्वनाथ ने अपने दस भवों में आये संघर्ष व उपसर्ग पर एकमात्र समता से सफलता प्राप्त की। उनके वैरी कमठ ने जितनी बार उनको दबाया, पीड़ित किया उतना ही भगवान ऊपर उठते गये, सफलता का शिखर प्राप्त करते गये। उन्होंने ईंट का जवाब पत्थर से नहीं दिया बल्कि क्रोध का सामना क्षमा से किया। उन्होंने क्रोध की अग्नि पर क्षमा का जल डाल दिया। भगवान को परेशान करने वाला स्वयं हर बार दुःख के महासागर में गिरता गया। भगवान पार्श्वनाथ का जीवन बताता है अच्छाई का फल अच्छा होता है और कमठ का जीवन बताता है बुराई का फल बुरा होता है। भगवान पार्श्वनाथ ने अपने पवित्र आचरण से बताया जीव का स्वभाव समता है, विषमता नहीं। उनकी समता कष्ट सहिष्णुता को सारे संसार ने सराहा तथा उन्हें अपना आदर्श माना। इसलिए आज भारत सहित सम्पूर्ण देश वा विदेश के सभी जिनालयों में सर्वाधिक भगवान पार्श्वनाथजी की प्रतिमायें विराजमान हैं। श्रावकों ने आचार्यों की प्रेरणा से उनकी प्रतिमा विराजमान की तो अनेक आचार्यों, मुनियों, भट्टारकों व कवियों ने उनके जीवन चरित्र को अनेक पुराण ग्रन्थों, कथा, नाटक, कविता–स्तोत्र व

पूजा में लिपिबद्ध किया। सबने अपनी शैली में भगवान का गुणानुवाद किया। भगवान पार्श्वनाथ के नाम से अनेक व्रत भी किये जाते हैं। उनमें रविव्रत व मुकुट सप्तमी व्रत विशेष हैं। सम्पूर्ण देश में सर्वाधिक प्रचलित व्रत रविव्रत है। रविव्रत भी अहंकारी के अहंकार को तोड़ने वाला और धनहीन को धनवान, दुःखियों को सर्वसुखी बनाने वाला व्रत हैं। इसकी कथा से हम व्रत के सम्पूर्ण रहस्य को जान सकते हैं। रविव्रत पर भी संस्कृत व हिन्दी में अनेक विधान देखने को मिलते हैं। इसी रविव्रत पर हमारी संघस्था आर्यिका आस्थाश्री माताजी ने भी एक सुन्दर सारगर्भित स्वतंत्र रविव्रत विधान बनाया है। रविव्रत के 9 वर्ष के 9 वलयों के अर्घ में माताजी ने अपने ढंग से भगवान पार्श्वनाथ की भक्ति की है। साथ में हम प्रभु भक्ति कितने द्रव्यों से, कितने प्रकार से कर सकते हैं। यह संदेश भी विधान के अनेक छन्दों में दिया है।

इसमें 81 अर्घ व कुछ पूर्णार्घ है इस विधान में उन्होंने, दोहा, काव्य, शम्भु, सखी, नरेन्द्र, चौपाई, गीता आदि अनेक छन्दों का प्रयोग किया है। पूरा विधान सरल, सहज सुन्दर है।

नंदीश्वर विधान और भी अनेक विधानों की रचना की है व महासती चन्दना, सती मनोरमा आदि अनेक कथा साहित्य का भी सृजन किया है। एक साथ **'सोलहकारण, दशलक्षण, पंचमेरु, नंदीश्वर, रविव्रत, मोक्षशास्त्र, णमोकार, एकीभाव, चंदन षष्ठी विधान'** ये आठ विधान संयुक्त रूप में प्रकाशित होने जा रहे हैं। इन विधानों में माताजी ने शंभु, गीता, नरेन्द्र, जोगीरासा, कुसुमलता, चौपाई, अवतार, सखी, काव्य, दोहा, सोरठा, अडिल्ल, रोला, धत्ता, त्रिभंगी आदि अनेक छंदों का सुन्दर ढंग से प्रयोग किया है। मूल में **सोमसेनाचार्य व अभयनंदी आचार्य** ने प्राकृत व संस्कृत भाषा में सोलहकारण व दशलक्षण विधान की रचना की है व हिन्दी में **रईधु कवि** के दोनों विधान है। उन्हीं को आधार बनाकर वर्तमान भाषा शैली में नये ढंग से सरल छन्दों में, सुलझे सरस शब्दों में माताजी ने बहुत ही सुन्दर रचना की है।

विधान लेखन के क्षेत्र में माताजी का रचना धर्म अत्यन्त सराहनीय, प्रशंसनीय है। इसके साथ माताजी ने एकीभाव व णमोकार विधान आदि अनेकों की भी रचना की है, जो प्रकाशित हो गये हैं।

आपकी यह लेखनी अनवरत चलती रहे एवं यही श्रुत साधना, केवलज्ञान की प्राप्ति में कारण बने, यही उनके लिए आशीर्वाद है।

ग्रन्थ के प्रकाशक, मुद्रक व पूजक सभी को शुभाशीर्वाद।

–आचार्य गुप्तिनन्दी

भक्ति में शक्ति

तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्ति हराय नाथ।
तुभ्यं नमः क्षिति-तलामल भूषणाय॥
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय।
तुभ्यं नमो जिन ! भवोदधि शोषणाय॥26॥

यह अतिशयकारी **'एकीभाव स्तोत्र'** है। जिसके पढ़ने-सुनने मात्र से सातिशय पुण्य का बंध होता है। इस **'एकीभाव स्तोत्र'** की रचना के पीछे एक

चमत्कारी घटना छिपी है; क्योंकि बिना कारण के कोई कार्य नहीं होता, हर कार्य के पीछे कुछ-न-कुछ कारण अवश्य होता है। यह **'एकीभाव स्तोत्र'** किसी छोटे से साधु ने नहीं लिखा बल्कि एक महाविद्वान् तार्किक चूड़ामणि महाज्ञानी गुरुवर **वादिराज आचार्य** के द्वारा लिखा गया है। कहते हैं कि इनके सामने जब कोई वाद-विवाद करने पास में आता था तो वह आपके सामने ठहर नहीं पाता था, हारकर चला जाता था। इस कारण आचार्यश्री का नाम ही वादिराज पड़ गया। वाद-विवाद में कोई भी इनसे जीत नहीं सकता था।

केवल भगवान का नाम मात्र लेने से हमारे दुःख, संकट दूर हो सकते हैं। हमें चाहे संस्कृत स्तोत्र का अर्थ समझ में नहीं भी आये तो भी श्रद्धा से आचार्यों के द्वारा जो स्तोत्र जिस भाषा में लिखा है उसे उसी भाषा में पढ़ने व सुनने से अधिक पुण्य का बंध होता है। 24 घण्टे में एक न एक स्तोत्र का पाठ अवश्यमेव सभी भक्तों को करना चाहिये। स्तोत्र पढ़ना, पाठ करना, मंत्र जाप करना, भगवान के नाम मंत्र का स्मरण करना, स्तुति करना; ये सब भक्ति हैं।

एकीभाव विधान का माण्डला

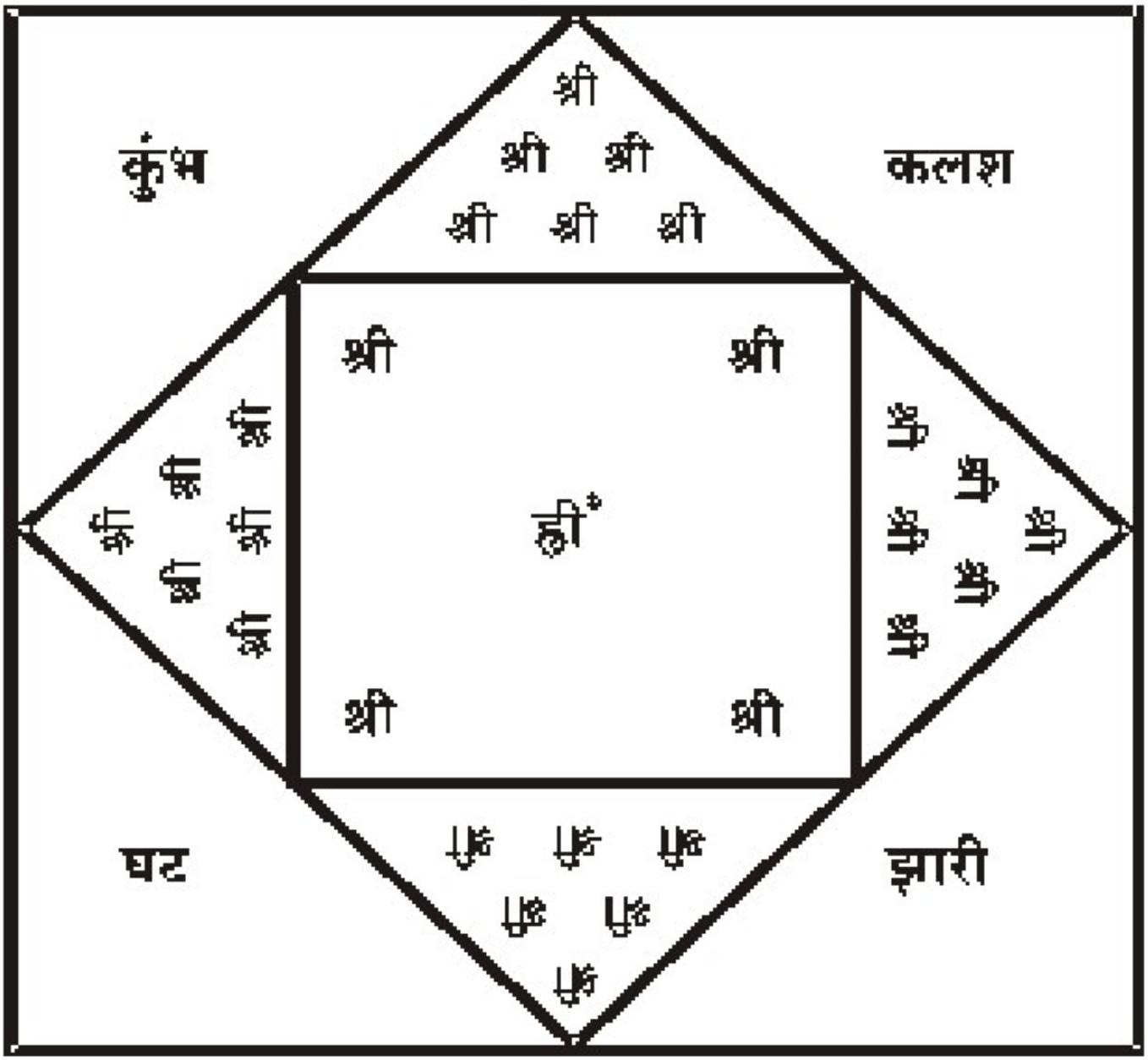

पूजन की थाली में निम्नलिखित श्लोक बोलते हुए स्वस्तिक बनायें व अंक लिखें–

श्लोक– **रयणत्तयं च वंदे चउवीस जिणे च सव्वदा वंदे।**
पञ्च गुरुणां वंदे चारण–चरणं च सव्वदा वंदे।।

3

2 卐 24

5

विनय पाठ

(दोहा)

प्रथम जिनेश्वर देव हो, वीतराग सर्वज्ञ।
हित उपदेशी नाथ तुम, ज्ञानरवि मर्मज्ञ।।1।।

केवलज्ञानी बन प्रभो, हरा जगत् अंधियार।
तीन लोक के बंधु बन, किया जगत् उपकार।।2।।

धर्म देशना से मिला, जग को दिव्य प्रकाश।
तव चरणों में नित रहे, यही करें अरदास।।3।।

कर्म बेड़ियाँ तोड़ने, भक्ति करें त्रयकाल।
तीन योग से हे प्रभो !, चरणों में नत भाल।।4।।

चतुर्गति भव भ्रमण से, तारों हमें जिनेश।
दयानिधि जिन ! कर दया, हरलो पाप विशेष।।5।।

प्रभुवर पूजा आपकी, सर्व रोग विनशाय।
विष भी अमृत हो प्रभो !, शत्रु मित्र बन जाय।।6।।

हलधर बलधर चक्रधर, अर्चा के उपहार।
परम्परा जिनभक्ति से, दे प्रभु पद उपहार॥7॥

बड़े पुण्य से जिन मिले, मिला प्रभु का द्वार।
मुक्त करो त्रय रोग से, विनती बारम्बार॥8॥

हम सेवक प्रभु आपके, हे अबोध ! अनजान।
राग-द्वेष अज्ञान हर, दे दो सच्चा ज्ञान॥9॥

मंगल उत्तम शरण है, मंगलमय जिनधर्म।
मंगलकारी सब गुरु, हरो हमारे कर्म॥10॥

चौबीसों जिनवर नमूँ, नमन पंच परमेश।
जिनवाणी गणधर गुरु, 'आस्था' नमें हमेश॥11॥

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

पूजा आरंभ (हिन्दी)

ॐ जय-जय-जय - नमोस्तु-नमोस्तु-नमोस्तु।
णमो अरिहन्ताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं॥

(ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः परिपुष्पाञ्जलि क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि, केवलिपण्णत्तो धम्मो सरणं पवज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा, पुरिपुष्पाञ्जलि क्षिपामि।

णमोकार मंत्र महिमा

(चौपाई)

अपवित्र या जन पवित्र हो, सुस्थित हो या दुस्थित भी हो।
नमस्कार मंत्रों को ध्यायें, पापों से छुटकारा पायें।।1।।

सर्व अवस्था में भी ध्यायें, पापी भी पावन बन जाये।
जो सुमिरे नित परमातम को, अन्दर बाहर शुचि बने वो।।2।।

अपराजित ये मंत्र कहाता, सब विघ्नों को दूर भगाता।
सब मंगल में मंगलकारी, प्रथम सुमंगल जग उपकारी।।3।।

महामंत्र णवकार हमारा, सब पापों से दे छुटकारा।
सब मंगल में प्रथम कहाता, महामंत्र मंगल कहलाता।।4।।

परम ब्रह्म परमेष्ठी वाचक, सिद्धचक्र सुन्दर बीजाक्षर।
मैं मन-वच-काया से नमता, नमस्कार मंत्रों को करता।।5।।

अष्टकर्म से मुक्त जिनेश्वर, श्रीपति जिन मंदिर परमेश्वर।
सम्यक्त्वादि गुणों के स्वामी, नमस्कार मैं करता स्वामी।।6।।

जिनवर की संस्तुति करने से, मुक्ति मिले सारे विघ्नों से।
भूतादि का भय मिट जाता, विष निर्विष निश्चित हो जाता।।7।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे कल्याणमहंयजे।।1।।

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाण पंचकल्याणकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिनइष्टमहंयजे।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हंत्सिद्ध आचार्य उपाध्याय सर्वसाधुभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिननाममहंयजे॥3॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनसहस्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्ति मंगल विधान

(शंभु छंद)

श्री मज्जिनेन्द्र हो विश्ववंद्य, तुम तीन जगत के ईश्वर हो।
तुम चऊ अनंत गुण के धारी, स्याद्वाद धर्म परमेश्वर हो॥
श्री मूल संघ की विधि से मैं, अपना बहु पुण्य बढ़ाने को।
मैं मंगल पुष्प चढ़ाता हूँ, जिन पूजा यज्ञ रचाने को॥1॥

त्रैलोक्य गुरु हे जिनपुंगव !, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ।
अपने स्वभाव में सुस्थित जिन, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ॥
सम्पूर्ण रत्नत्रय के धारी, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ।
हे समवशरण वैभव धारी, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ॥2॥

अविराम प्रवाहित ज्ञानामृत, सागर को पुष्प समर्पित है।
निज परभावों के भेद विज्ञ, जिनवर को पुष्प समर्पित है॥
त्रिभुवन को सारे द्रव्यों के, नायक को पुष्प समर्पित है।
त्रैकालिक सर्व पदार्थों के, ज्ञायक को पुष्प समर्पित है॥3॥

पूजा के सारे द्रव्यों को, श्रुत सम्मत शुद्ध बनाया है।
यह भाव शुद्धि के अवलम्बन, द्रव्यों को शुद्ध सजाया है॥
शुचि परमातम का अवलम्बन, आतम को शुद्ध बनाता है।
उसको पाने हे जिन ! तेरी, यह पूजा भव्य रचाता है॥4॥

अर्हत् पुराण पुरुषोत्तम जिन, उनमें न सचमुच गुरुता है।
मैं भी स्वभाव से उन सम हूँ, मुझमें न निश्चय लघुता है॥

प्रभु से हो एकाकार मेरा, मैं ऐसी भक्ति रचाता हूँ।
केवल ज्ञानाग्नि में अपना, मैं पुण्य समग्र चढ़ाता हूँ॥5॥

ॐ ह्रीं जिनप्रतिमोऽपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

स्वस्ति मंगल पाठ

(चौपाई)

वृषभ सुमंगल करे हमारा, अजित सुमंगल करे हमारा।
संभव स्वामी मंगलकारी, अभिनंदन हैं मंगलकारी॥1॥

सुमतिनाथ हैं मंगलकारी, पद्मप्रभु हैं मंगलकारी।
श्री सुपार्श्व जिन मंगलकारी, चंद्रप्रभु हैं मंगलकारी॥2॥

पुष्पदंत हैं मंगलकारी, शीतल स्वामी मंगलकारी।
श्री श्रेयांस जिन मंगलकारी, वासुपूज्य हैं मंगलकारी॥3॥

विमलनाथ हैं मंगलकारी, श्री अनंत जिन मंगलकारी।
धर्मनाथ हैं मंगलकारी, शांतिनाथ हैं मंगलकारी॥4॥

कुंथुनाथ हैं मंगलकारी, अरहनाथ हैं मंगलकारी।
मल्लिनाथ हैं मंगलकारी, मुनिसुव्रत हैं मंगलकारी॥5॥

नमि जिनवर हैं मंगलकारी, नेमीनाथ हैं मंगलकारी।
पार्श्वनाथ हैं मंगलकारी, वीर जिनेश्वर मंगलकारी॥6॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

स्वस्ति मंगल विधान

(यहाँ प्रत्येक श्लोक के अंत में पुष्पाञ्जलि क्षेपण करना चाहिए।)

नित्य अचल क्षायिक ज्ञानधारी, विशुद्ध मनःपर्यय ज्ञानधारी।
देशावधि आदि युत ऋषि मुनिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥1॥

महाकोष्ठ बीजबुद्धि पदानुसारि, संभिन्न संश्रोतृ स्वयं बुद्धिधारी।
प्रत्येकबुद्ध-बोधिबुद्ध ऋषिवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।2।।

अभिन्नदशपूर्व-चतुर्दश पूर्वी, दिव्य मतिज्ञान महाबलधारी।
अष्टांगनिमित्त ज्ञाता ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।3।।

स्पर्श-चक्षु-कर्ण-घ्राण-रसना, आदि प्रबल इन्द्रिय के धारी।
महाशक्तिवन्त जिनमुनि-यति-ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणोंमें।।4।।

फल-तन्तु-नीर-जंघा-श्रेणी, पुष्प-बीज-अंकुर-रवि-अग्नि-गामी।
नभ-जल-वायुचारण ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।5।।

अणु-महालघु-गुरुऋद्धिधारी, सकामरूपित्व-वशित्वधारी।
वर्द्धमान बल के धारी गुरुवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।6।।

मन औ वचनबल-कायबल ऋद्धि, प्राकाम्य-अप्रतिघात गुणधारी।
विक्रिया-क्रियाऋद्धि धारी गुरुवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।7।।

उग्रोग्रतप-दीप्त-तप-तप्ततपसी, अवस्थित-उग्रतप-महातपऋद्धि।
तपो-लब्धि आदि से युक्त ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।8।।

आमर्ष-सर्वौषध ऋद्धिधारी, आषीर्विष-दृष्टिविष बल धारी।
सखिल्ल-विडजल्ल-मल्लौषधियुक्त, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।9।।

क्षीरास्रवी-घृतस्रावी मुनीश्वर, अमृत-मधु-महारस के धारी।
अक्षीणआलय-महानस आदि, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।10।।

इति परमर्षि स्वस्ति मंगल विधानं

(9 बार णमोकार मंत्र का जाप करें)

श्री नित्यमह पूजा

रचियित्री : ग. आर्यिका राजश्री माताजी

शंभु छन्द *(तर्ज– हे वीर तुम्हारे...)*

अरिहंत, सिद्ध, सूरी, पाठक, साधु और जिनवर चौबीसों।
गणधर जिन पंच बालयतिवर, जिन आगम गुरु प्रभुवर बीसों।।
माँ जिनवाणी, निर्वाणभूमि, रत्नत्रय, दशलक्षण प्यारा।
नंदीश्वर पंचमेरू जिनवर, जिनचैत्य चैत्यालय मनहारा।।
जिनधर्म जिनागम बाहुबली, सोलहकारण पूजन करता।
इनका आह्वानन करके मैं, श्री मोक्ष महल का सुख वरता।।1।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

नरेन्द्र छन्द *(तर्ज : माइन–माइन...)*

धीर वीर गंभीर प्रभु की अर्चा मैं नित करता हूँ।
निर्मल जल की त्रय धारा दे जन्म–जरा–मृत हरता हूँ।।
देव–शास्त्र–गुरु बीस तीर्थंकर जिनवाणी गणधर पूजा।
त्रय चौबीसी रत्नत्रय नंदीश्वर दशलक्षण पूजा।।
सोलहकारण बाहुबली निर्वाणभूमि वा नवदेवा।
पंच परम परमेष्ठी पद की करते उत्तम सेवा।।1।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल चंदन चरण चढ़ाता शीतलता मुझको देना।
भव का बन्धन हरने वाले भव की ज्वाला हर लेना।। देव शास्त्र..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल मनोहर अक्षत लाया अक्षयपद पाने हेतू।
अक्षयपद को देने वाली पूजन है सबका सेतू ।। देव शास्त्र..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जल भूमिज बहु पुष्प चढ़ाऊँ श्रद्धा से जिन गुण गाऊँ।
कामबाण को वश में करके मन ही मन मैं हर्षाऊँ ।।
देव-शास्त्र-गुरु बीस तीर्थंकर जिनवाणी गणधर पूजा।
त्रय चौबीसी रत्नत्रय नंदीश्वर दशलक्षण पूजा।।
सोलहकारण बाहुबली निर्वाणभूमि वा नवदेवा।
पंच परम परमेष्ठी पद की करते उत्तम सेवा।।4।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पुआ पकौडी रबड़ी घेवर आदिक व्यंजन मैं लाया।
क्षुधावेदनी के भेदन को प्रभु सन्मुख दौड़ा आया।। देव शास्त्र..।।5।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग दीपों की थाली ले आरती प्रभु की गाऊँगा।
मोहकर्म का नाश मेरा हो सम्यक्भाव बनाऊँगा।। देव शास्त्र..।।6।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप धूपायन में खेकर मैं अष्टकर्म का हनन करूँ।
प्रभु प्रतिमा के दर्शन करके निज स्वभाव का वरण करूँ।। देव शास्त्र..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे मीठे फल से अर्चा मनवांछित फल देती है।
प्रभु की अर्चा मेरे जीवन के संकट हर लेती है।। देव शास्त्र..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादिक आठों द्रव्यों का सुन्दर थाल सजाया है।
पद अनर्घ्य की अभिलाषा से भक्तिभाव जगाया है।। देव शास्त्र..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : वीतराग भगवान की, पूजा सब सुख खान।
त्रयधारा जल की करूँ, छोड़ूँ सब अभिमान।।

शांतये शांतिधारा।

दोहा– काम सृष्टि का नाश हो, पुष्पवृष्टि के साथ।
पुष्पांजलि क्षेपण करूँ, पूर्ण विनय के साथ।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : जयमाला की माल से, गूंजे जय–जयकार।
जयमाला हम पढ़ रहे, मिलकर सब नर–नार।।

शंभु छन्द *(तर्ज : ये देश है वीर...)*

श्री वीतराग सर्वज्ञ हितैषी अरिहंतों को नमन करूँ।
श्री सिद्ध सूरी पाठक साधु जिनचैत्य जिनालय नमन करूँ।।
सब द्वीपों के प्रभुवर न्यारे सीमंधर आदिक को ध्याऊँ।
श्री पंचमेरू अरू नंदीश्वर के चैत्यालय के गुण गाऊँ।।1।।

दशलक्षणधर्म हृदय धारूँ सोलहकारण भावन भाऊँ।
रत्नत्रय धारण करने के सम्यक् साधन को अपनाऊँ।।
चौदह सौ बावन गणधर जी सब ऋद्धि–सिद्धि देने वाले।
प्रभु के पाँचों कल्याणक भी सबका संकट हरने वाले।।2।।

जिनवर के सब जन्मस्थल को करता हूँ मैं शत–शत वंदन।
श्रावस्ती कौशाम्बी काशी अयोध्या चंद्रपुरी वंदन।।
काकंदी राजगृही मिथिला चंपापुर कुंडलपुर वंदन।
वैशाली सिंहपुरी कम्पिल हस्तिनापुर आदि वंदन।।3।।

अतिशय औ सिद्धक्षेत्र जी का सुमरण सब पाप तिमिर हरता।
मैं चंपा पावा ऊर्जयंत सम्मेदशिखर वंदन करता।।

पावा द्रोणा सोना तुंगी कैलाश चूलगिरी ध्याऊँगा।
रेसंदी मुक्ता उदयरत्न कुंथलगिरी को मैं जाऊँगा।।4।।

विपुलाचल पोदनपुर मथुरा तारंगा गजपंथा वंदन।
श्री सिद्धवरकूट कमलदहजी गुणावा शत्रुंजय वंदन।।
अहिक्षेत्र अणिंदा णमोकार जटवाडा पैठण चंवलेश्वर।
कचनेर चाँदखेड़ी पाटन जिन्तूर तिजारा गोमटेश्वर।।5।।

कुन्थुगिरी नवग्रह धर्मतीर्थ मांडल केशरिया को वंदन।
श्री महावीरजी पदमपुरा ऋषितीर्थ आदि को भी वंदन।।
जय ऊर्ध्व मध्य और अधोलोक के सब चैत्यालय मनहारी।
निर्वाण सिधारे पूज्य पुरुष की पूजा सब संकटहारी।।6।।

श्री राम हनु सुग्रीव नील महानील कुम्भ शम्बु ज्ञानी।
लवमदनांकुश सागर वरदत्त श्री बाहुबली स्वामी ध्यानी।
गौतम जम्बू सुधर्मा श्री त्रय पांडवसुत अनिरूद्ध नमन।
इस ढाईद्वीप से मोक्ष पधारे उन गुरुओं को है वंदन।।7।।

श्री पँचबालयति को ध्यायें नवदेवों की शरणा पायें।
सातिशय पुण्य कमाने को मंगलमय पूजा हम गायें।।
जिनगुण के अनुरागी बनकर संसार भ्रमण का नाश करें।
शिवपुर के राजतिलक हेतु यह 'राज' प्रभुगुण आश करे।।8।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : श्री जिन के आशीष से, प्रगटाऊँ निज ज्ञान।
पूजन-कीर्तन-भजन से 'राज' वरे शिव थान।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

श्री चौबीस तीर्थंकर पूजा

रचनाकार–आचार्य गुप्तिनंदीजी

(गीता छन्द)

वृषभादि से वीरान्त तक है सर्व जिन की अर्चना।
हरती हमारे पाप तम और क्लेश की सब वंचना।।
त्रय रत्न गुणधर तीर्थकर की पुष्प लेकर थापना।
प्रभु का परम सान्निध्य पा हम दुःख मिटाये आपना।।1।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणं।

(अडिल्ल छन्द)

निर्मल जल हम कंचन झारी में भरें।
जिनवर के चरणों में त्रय धारा करें।।
जिन शासन का चक्र प्रवर्तन कर रहे।
चौबीसों जिनवर भव संकट हर रहे।।1।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कुन्दन सम शीतल चन्दन अर्पण करें।
जिनवर की अर्चा भव का वर्तन हरे।। जिन शासन...।।2।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो भवातापविनाशनाय चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ता और अक्षत मुष्ठि में भर लिये।
अक्षय सुखदाता को अर्पण कर दिये।। जिन शासन...।।3।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

अम्बुज भूमिज मनहर सुरभित सुमन से।
मदनजयी को पूजे निज मन्मथ नशे।। जिन शासन...।।4।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस मधुर प्रासुक व्यञ्जन से अर्चना।
परम कृपालु हरें क्षुधा की वंचना।।
जिन शासन का चक्र प्रवर्तन कर रहे।
चौबीसों जिनवर भव संकट हर रहे।।5।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत कपूर दीपों से करते आरती।
जिनवर वाणी केवल दीप उजालती।। जिन शासन...।।6।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हितकर मनहर धूप चढ़ायें नाथ को।
कर्म विनाशन हेतु झुकायें माथ को।। जिन शासन...।।7।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपम् निर्वपामीति स्वाहा।

सरस मधुर केला आदि फल ला रहे।
मुक्ति फल दाता के चरण चढ़ा रहे।। जिन शासन...।।8।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल-फल आदि अर्घ बनाये भाव से।
अनर्घ पद हित भक्ति रचायें चाव से।। जिन शासन...।।9।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- प्रभु को लख प्रमुदित हुआ, मन में हर्ष अपार।
तन मन को शांति मिले, करता शांतिधार।।

शांतये शांतिधारा...

प्रभु चरणों के पास में, अर्पित करते हार।
संयम के सौरभ खिले, पायें शिवपुर द्वार।।

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्....

जाप्य मन्त्र-ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

(9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा – आदिनाथ से वीर तक चौबीसों भगवान।
उनकी जयमाला पढ़ें होवें सिद्ध समान।।

चौपाई

वृषभ धर्म वृषभेश बतायें, अजित कर्म अरि पर जय पायें।
संभव भव का भ्रमण छुड़ायें, अभिनंदन सुरवंद्य कहाये।।1।।

सुमति जिनेश सुमति के दाता, चित्त पद्म के पद्म विधाता।
श्री सुपार्श्व भव पाश हरेंगे, 'चन्द्र' चित्त में वास करेंगे।।2।।

पुष्पदंत को पुष्प चढ़ायें, शीतल अंतस्तल बस जायें।
श्री श्रेयांस श्रेय के दाता, वासुपूज्य वसु कर्म विघाता।।3।।

विमल कर्म मल दूर भगायें, जिन अनंत शक्ति प्रगटायें।
धर्मनाथ दशधर्म सिखायें, शांति जगत में शांती लायें।।4।।

कुंथु से कुंथ्वादिक रक्षा, अरहनाथ की श्रेष्ठ विवक्षा।
मल्लि कर्म मल्लों को जीते, मुनि सुव्रत व्रत अमृत पीते।।5।।

नमि को नमे सकल नर नारी, नेमि तजे राजुल सुकुमारी।
पारस के हम पार्श्व रहेंगे, वर्द्धमान को नमन करेंगे।।6।।

चौबीसों तीर्थेश हमारे, पंचकल्याणक जिनके न्यारे।
'गुप्तिनंदी' प्रभु के गुण गाये, तीन गुप्ति धर शिव सुख पाये।।7।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरांत चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

चौबीसों जिनदेव को, वंदन बारम्बार।
उनकी पूजा भक्ति से, मिले मोक्ष प्राकार।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ऋद्धि मंत्र

स्वाहा बोलते हुये प्रत्येक मंत्र में यहाँ पुष्प चढ़ायें या धूप चढ़ायें। विधान करने से पूर्व ऋद्धि मंत्र अवश्य पढ़े।

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।।1।।

1. णमो जिणाणं
2. णमो ओहि-जिणाणं
3. णमो परमोहि-जिणाणं
4. णमो सव्वोहि-जिणाणं
5. णमो अणंतोहि-जिणाणं
6. णमो कोट्ठ-बुद्धीणं
7. णमो बीज-बुद्धीणं
8. णमो पादाणु-सारीणं
9. णमो संभिण्ण-सोदारणं
10. णमो सयं-बुद्धाणं
11. णमो पत्तेय-बुद्धाणं
12. णमो बोहिय-बुद्धाणं
13. णमो उजु-मदीणं
14. णमो विउल-मदीणं
15. णमो दस पुव्वीणं
16. णमो चउदस-पुव्वीणं
17. णमो अट्ठंग-महा-णिमित्त-कुसलाणं
18. णमो विउव्वइड्ढि-पत्ताणं
19. णमो विज्जाहराणं
20. णमो चारणाणं
21. णमो पण्ण-समणाणं
22. णमो आगासगामीणं
23. णमो आसी-विसाणं
24. णमो दिट्ठिविसाणं
25. णमो उग्ग-तवाणं
26. णमो दित्त-तवाणं
27. णमो तत्त-तवाणं
28. णमो महा-तवाणं
29. णमो घोर-तवाणं
30. णमो घोर-गुणाणं
31. णमो घोर-परक्कमाणं
32. णमो घोर-गुण-बंभयारीणं
33. णमो आमोसहि-पत्ताणं
34. णमो खेल्लोसहि-पत्ताणं
35. णमो जल्लोसहि-पत्ताणं
36. णमो विप्पोसहि-पत्ताणं
37. णमो सव्वोसहि-पत्ताणं
38. णमो मण-बलीणं
39. णमो वचि-बलीणं
40. णमो काय-बलीणं
41. णमो खीर-सवीणं
42. णमो सप्पि-सवीणं
43. णमो महुर सवीणं
44. णमो अमिय-सवीणं
45. णमो अक्खीण महाणसाणं
46. णमो वड्ढमाणाणं
47. णमो सिद्धायदणाणं
48. णमो सव्व साहूणं

(णमो भयवदो-महदि-महावीर-वड्ढमाण-बुद्ध-रिसीणो चेदि।)

इति पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

आदिनाथ भगवान की स्तुति

(चामर छन्द)

मैं सदा-सदा नमूँ, जिनेश आदिनाथ को।
श्री मुनीश वा जगीश, देव आदिनाथ को।।
हे जिनेश ! हे जिनेश !, आपको प्रणाम है।
आपके सुवाक्य ही, त्रिलोक में प्रमाण है।।1।।

आदिनाथ आदिनाथ, आप व्याधियाँ हरें।
आदिनाथ जाप से, दुःखादि व्याधियाँ हरें।।
पुण्य के प्रताप से, सुकर्म भूमि आ गई।
सर्वलोक में विशेष धर्म कीर्ति छा गई।।2।।

श्रेष्ठ हैं सुज्येष्ठ हैं, जिनेश सर्वश्रेष्ठ हैं।
तीन लोक के महेश, आप सर्वश्रेष्ठ हैं।।
आपके सुनाम से, सुदीप ज्ञान के जलें।
रोग शोक नाश हेत, भक्त पूजते चले।।3।।

कुष्ठ रोग सूरि वादिराज, का मिटा दिया।
स्तोत्र का प्रभाव नाथ, आपने दिखा दिया।।
नाथ आप हो जहाँ, कमाल ही कमाल हो।
आप के प्रभाव से, अकाल भी सुकाल हो।।4।।

कीर्ति आप नाम की, त्रिलोक में प्रसिद्ध हो।
आप भक्ति से जिनेन्द्र, भक्त लोक सिद्ध हो।।
मैं सदा-सदा नमूँ, जिनेश आदिनाथ को।
श्री मुनीश वा जगीश, देव आदिनाथ को।।5।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

एकीभाव पूजा विधान

श्री आदिनाथ पूजा

(नरेन्द्र छन्द)

आदिनाथ प्रभुवर का हम सब, भक्ति से जयकार करें।
हाथों में पुष्पाञ्जलि लेकर, आह्वानन हम आज करें।।
नाभिराय के कुलदीपक को, सौ-सौ इन्द्र सदा नमते।
गणधर सुर असुरों से पूजित, ऋषभदेव को हम भजते।।

ॐ ह्रीं श्री युगब्रह्मा, युगपुरुष, प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्।

ॐ ह्रीं शतेन्द्र पूजित सहस्रनाम धारक आद्य जिनेश्वर श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठ:-ठ: स्थापनम्।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणक विभूषित कल्याणकारक धर्मतीर्थ प्रवर्तक श्री आदिनाथ ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शेर छंद)

भर भरके कुंभ इक हजार आठ लायेंगे।
पाण्डुक शिला पे नाथ का न्हवन करायेंगे।।
देवों के देव ऋषभदेव से है प्रार्थना।
मुनिराज वादिराज जैसी हो प्रभावना।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु को लगाये गंध शेष शीश जो धरें।
वो कामदेव के समान देह को वरें।। देवों के देव...।।2।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अतुल्य शक्तिवान आदि जिनेशा।
मोती व अक्षतों से भजे भक्त हमेशा।। देवों के देव...।।3।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जल थल वा स्वर्ण रत्न के, ये पुष्प चुनाये।
प्रभु के पवित्र पाद चढ़ा भाग्य जगायें।।
देवों के देव ऋषभदेव से है प्रार्थना।
मुनिराज वादिराज जैसी हो प्रभावना।।4।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

षट्मास का उपवास किया आपने प्रभो।
षट् रसमयी व्यंजन चढ़ायें आपको विभो।। देवों के देव...।।5।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये लाख-लाख दीप लेके नृत्य हम करें।
कैवल्य ज्योति पाने आज आरती करें।। देवों के देव...।।6।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आपके समान बनने धूप चढ़ाऊँ।
आठों करम को नाशने मैं भक्ति रचाऊँ।। देवों के देव...।।7।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम फलों से अर्चना जिनदेव आपकी।
सर्वोच्च फल दिलाये एक भक्ति आपकी।। देवों के देव...।।8।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु द्रव्य से भजें प्रभु को इन्द्र नरेशा।
भक्ति से भक्त पूजते हैं आदि जिनेशा।। देवों के देव...।।9।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- सरवर सरिता का सरस, लाया भरकर नीर।
त्रय लोकों में शांति हो, हरो नाथ सब पीर।।

शांतये शांतिधारा.....

दोहा- समवशरण में नाथ पे, बरसे पुष्प अपार।
श्री विहार में सुर रचे, हेम पद्म मनहार।।

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें)

जयमाला

(धत्ता)

श्री प्रथम जिनेशा, नमित सुरेशा, आद्यबंधु आदीश्वर जिन।
जयमाल रचायें, पुण्य बढ़ायें, प्रभु को ध्यायें हम निशदिन।।

(दोहा)

आदिनाथ भगवान की, बोलें जय-जयकार।
ऋषभदेव जिनराज को, वंदन बारम्बार।।1।।

नाभिराय के लाल ने, किया जगत कल्याण।
मरुदेवी सुत वृषभ जिन, बने ज्येष्ठ भगवान।।2।।

श्री अवधेश्वर नाथ का, हुआ अवध अवतार।
शांति हुई त्रयलोक में, खुशियाँ अपरम्पार।।3।।

मतिश्रुत अवधिज्ञान युत, होता गर्भ कल्याण।
होता मेरु पे न्हवन, दूजा जन्म कल्याण।।4।।

लौकान्तिक सुर मना रहे, प्रभु का तप कल्याण।
दिव्य देशना हो जहाँ, वही ज्ञान कल्याण।।5।।

सुरगण चार निकाय के, पूजें मोक्ष कल्याण।
निज को प्रभु ने पा लिया, करके मोक्ष प्रयाण।।6।।

युग को युग कर्त्ता मिले, युगब्रह्मा है नाम।
युग को परिवर्तित किया, सुर-नर करें प्रणाम।।7।।

असि मसि कृषि वाणिज्य ये, शिल्प कला का ज्ञान।
षट् कर्मों के ज्ञान से, बचे जीव के प्राण।।8।।

एक शतक सुत को दिया, अस्त्र-शस्त्र विज्ञान।
राजसुता द्वय को दिया, युगल लिपि का ज्ञान॥9॥

महिमा आदिनाथ की, जग में अति विशाल।
नर-सुर गुण ना गा सकें, इन्द्र झुकाये भाल॥10॥

प्रतिमा प्रभु की है जहाँ, अतिशय हुये महान्।
अति उत्तुंग मनोज्ञ हैं, बावनगज भगवान॥11॥

भातकुली अपराजिता, धर्मतीर्थ कैलाश।
ऋषभदेव ऋषिकेश वा, कुंडलपुर में वास॥12॥

रानीला, कुरुक्षेत्र वा, अष्टापद व प्रयाग।
सर्वक्षेत्र को पूजता, जय जय बद्रीनाथ॥13॥

वादिराज ऋषिराज ने, ध्याया तुम्हें त्रिकाल।
एकीभाव विधान से, कुष्ठ मिटा तत्काल॥14॥

मन मेरा प्रभु में रंगा, ना उतरे ये रंग।
मन वच काया गुप्ति से, पाऊँ प्रभु का संग॥15॥

ऋषभदेव का नाम ही, आदिनाथ जगदीश।
भक्ति रस पाने प्रभु, 'आस्था' है नत शीश॥16॥

ॐ ह्रीं सर्वरोग, शोक, दुःख, संकट, पीड़ा, कष्ट, क्लेश, अशांति, तनाव, चिंता, अपमृत्यु, टेंशन, कैंसर, कोरोना रोग, सर्व ज्वरादि विनाशनाय, सुख-शांति, आरोग्य, ऋद्धि-सिद्धि, यश-कीर्ति, धन-धान्य, ऐश्वर्य जिनगुणसंपत्ति प्रदायकाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

नगर अयोध्या नाथ, ऋषभदेव भगवान ये।
जय-जय आदिनाथ, प्रथम सूर्य को है नमन॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

विधान प्रारम्भ

दोहा– एकीभाव विधान हम, करें भक्ति के साथ।
रोग–शोक संकट हरें, जिनवर आदिनाथ।।

(अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(1) कर्म बंधन विनाशक

एकीभावं गत इव मया यः स्वयं कर्मबन्धो,
घोरं दुःखं भवभवगतो दुर्निवारः करोति।
तस्याप्यस्य, त्वयि जिनरवे भक्तिरुन्मुक्तये चेत्,
जेतुं शक्यो भवति न तया कोऽवरस्ताप हेतुः ॥1॥

(नरेन्द्र छंद)

एकीभाव को प्राप्त हुये ये, आठों कर्म दुःखी करते।
बड़े भयानक बड़े कठिन हैं, भव–भव में ताड़ित करते।।
श्री जिनेन्द्र वे ज्ञानसूर्य हैं, भव–भव के संताप हरें।
भक्ति की शक्ति से भविजन, अपने भवदुःख पाप हरें।।1।।

ॐ ह्रीं कर्मबंधनाशन समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(2) हृदय रोग निवारक, विद्या प्रदायक

ज्योतीरूपं दुरितनिवह ध्वांत विध्वंस हेतुं,
त्वामेवाहु र्जिनवर चिरं तत्त्वविद्याभियुक्ताः।
चेतोवासे भवसि च मम स्फारमुद्भासमान,
स्तस्मिन्नंहः कथमिव तमोवस्तुतो वस्तुमीष्टे।।2।।

श्रेष्ठ जिनेश्वर ज्ञान दिवाकर, ज्योतिर्मय जिनको कहते।
मुनियों के गणस्वामी जिनको, विद्या वाचस्पति कहते।।
विद्याधन धारी मेरे उर, ज्योतिपुंज बन चमक रहे।
जिसके मन जिननाथ विराजे, पाप वहाँ ना कभी रहे।।2।।

ॐ ह्रीं पापान्धकार विनाशन समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(3) आनंद प्रदायक, विषहारक

आनन्दाश्रुस्नपित वदनं गद्गदं चाभिजल्पन्,
यश्चायेत त्वयि दृढ़मनाः स्तोत्रमंत्रैर्भवन्तम्।
तस्याभ्यस्तादपि च सुचिरं देहवल्मीकमध्यान्,
निष्कास्यंते विविधविषमव्याधयः काद्रवेयाः।।3।।

आनंद अश्रु जब-जब निकले, मुख प्रक्षालन कर देते।
उसी तरह प्रभु की पूजन से, मन प्रक्षालन कर देते।।
मंत्रों की शक्ति वश अहि भी, वामी से बाहर आते।
जिन तेरे स्तोत्र मंत्र से, रोग काय के मिट जाते।।3।।

ॐ ह्रीं विषम व्याधि निष्कासन समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(4) कुष्ठ रोग निवारक, कंचन देह प्रदायक

प्रागेवेह, त्रिदिव भवनादेष्यता भव्य पुण्यात्,
पृथ्वीचक्रं कनकमयतां देव निन्येत्वयेदं।
ध्यानद्वारं मम रुचिकरं स्वान्तगेहं प्रविष्ट-,
स्तत्किं चित्रं जिनवपुरिदं यत्सुवर्णी करोषि।।4।।

स्वर्ग लोक से च्युत हो जिनवर, माता के उर में आते।
छः महीने से पूर्व देवगण, भू सोने से चमकाते।।
मैंने सुन्दर मन मंदिर में, तुम्हें बिठाकर ध्यान किया।
ये कोई आश्चर्य नहीं तन, कुष्ठ रोग से मुक्त हुआ।।4।।

ॐ ह्रीं भाक्तिकेषु तनुसुवर्णी करण समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(5) क्लेश निवारक

लोकस्यैकस्त्वमसि भगवन्निर्निमित्तेन बन्धु-
स्तवय्येवासौ सकलविषया शक्तिरप्रत्यनीका।
भक्तिस्फीतां चिरमधिवसन्मामिकां चित्तशय्यां
मय्युत्पन्नं कथमिव ततः क्लेशयूथं सहेथाः ॥5॥

संसारी प्राणी के जिनवर, आप अकारण बंधु हैं ।
सर्वज्ञेय की शक्ति जिनमें, निराबाध दृढ़ बंधु हैं ॥
भक्ति रत जिन-जिन भक्तों की, मन शैय्या पर आप रहे।
दुःख समूह वहाँ कैसे हो, क्यों कर वो दुःख शोक सहे॥5॥

ॐ ह्रीं सर्वक्लेश विनाशन समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(6) ज्वरशामक, दाह-ताप निवारक

जन्माटव्यां कथमपि मया देव दीर्घं भ्रमित्वा,
प्राप्तैवेयं तव नयकथा स्फारपीयूष वापी।
तस्या मध्ये हिमकर हिमव्यूह शीते नितान्तं,
निर्मग्नं मां न जहति कथं दुःखदावोपतापाः ॥6॥

किसी समय मैं भव अटवी में, दीर्घ काल तक भरमाया।
तभी आप नय कथा रूप की, अमृत वाणी को पाया॥
उस वापी में डुबकी लेता, दुःख संताप मिटाने को।
दुःख दावानल यहीं मिटेंगे, यह निश्चय कर जाने को॥6॥

ॐ ह्रीं दुःख दावोपतापशांतकरण समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(7) कल्याणकारक

पादन्यासादपि च पुनतो यात्रया ते त्रिलोकीं,
हेमाभासो भवति सुरभिः श्रीनिवासश्च पद्मः।
सर्वाङ्गेण स्पृशति भगवंस्त्वय्यशेषं मनो मे,
श्रेयः किं तत्स्वयमहरहर्यन्न मामभ्युपैति॥7॥

श्री विहार करते जब जिनवर, पावन तीनों लोक बने।
कमल रचे प्रभु के चरणों तल, कनक कमल श्रीवास बने॥
हे परमेश्वर ! सर्व अङ्ग से, मन से मैं संस्पर्श करूँ।
मेरा अब कल्याण करो जिन, प्रतिदिन प्रतिपल ध्यान करूँ॥7॥

ॐ ह्रीं सर्वश्रेयः प्रदान समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(8) वचन संबंधी दोष-रोग निवारक

पश्यन्तं त्वद्वचनममृतं भक्तिपात्र्या पिबन्तं,
कर्मारण्यात्पुरुषमसमानन्दधाम प्रविष्टम्।
त्वां दुर्वारस्मरमदहरं त्वत्प्रसादैक भूमिं-,
क्रूराकाराः कथमिवरुजा कण्टका निर्लुठन्ति॥8॥

कर्म काष्ठ को नष्ट किया है, मदन विजेता कहलाते।
कर्म समूल जलाकर जिनवर, अनुपम सुख शांति पाते॥
भक्ति का ले पात्र हाथ में, वचनामृत पीने आये।
तव प्रसाद से क्रूर रोग भी, सौम्य फूल सम बन जाये॥8॥

ॐ ह्रीं दुर्वाररोग निवारण समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(9) मानहारक

पाषाणात्मा तदितरसमः केवलं रत्नमूर्तिः,
मानस्तम्भो भवति च परस्तादृशो रत्नवर्गः।
दृष्टिं प्राप्तो हरति स कथं मानरोगं नराणां,
प्रत्यासत्तिर्यदि न भवतस्तस्य तच्छक्ति हेतुः॥9॥

रत्नमयी पाषाण रत्न का, मानस्तम्भ बना सुन्दर।
अन्य रत्न भी बड़े मनोहर, फिर भी है उनमें अन्तर॥
मानहरण का अद्भुत अतिशय, तव सन्निधि से होता है।
तुम दर्शन से वंचित दुर्भग, क्या ऐसा सुख पाता है॥9॥

ॐ ह्रीं भाक्तिक जनमानरोगहरण समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(10) खाज खुजली-चर्मरोग निवारक

ह्रद्यः प्राप्तो मरुदपि भवन्मूर्तिशैलोपवाही
सद्यः पुसां निरवधिरुजाधूलिबन्धं धुनोति।
ध्यानाहूतो हृदयकमलं यस्य तु त्वं प्रविष्टस्,
तस्याशक्यः क इह भुवने देव लोकोपकारः॥10॥

हे जिनवर ! तुम तन को छूकर, जिस जिस दिश में हवा बहे।
वहाँ सर्व पुरुषों के तत्क्षण, रोग धूलि सम दूर बहे॥
ध्यानमग्न हो मन पंकज पर, जो तुमको बैठाता है।
सर्वलोक उपचार कार्य में, वो समर्थ हो जाता है॥10॥

ॐ ह्रीं निरवधि रोग धूलि धुन्वन् समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(11) क्रोध उपशामक, भव दुःख निवारक

जानासि त्वं मम भवभवे यच्च यादृक्च दुःखं,
जातं यस्य स्मरणमपि मे शस्त्रवन्निष्पिनष्टि।
त्वं सर्वेशः सकृप इति च त्वामुपेतोऽस्मि भक्त्या,
यत्कर्त्तव्यं तदिह विषये देव एव प्रमाणम्॥11॥

भव-भव की मेरी सब पीड़ा, हे जिनवर ! तुम जान रहे।
जिनका सुमिरन मेरे मन में, शस्त्र सरीखे साल रहें॥
तुम सर्वेश्वर कृपावान हो, भक्त आय तेरे चरणा।
जो कुछ करना करो आप ही, तुम ही हो उत्तम शरणा॥11॥

ॐ ह्रीं भव-भव दुःखनिवारण समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(12) लक्ष्मी प्रदायक

प्रापद्दैवं तवनुति पदैर्जीवकेनोपदिष्टैः
पापाचारी मरणसमये सारमेयोऽपि सौख्यं।
कः संदेहो यदुपलभते वासवश्रीप्रभुत्वं
जल्पन् जाप्यैर्मणिभिरमलैस्त्वन्नमस्कारचक्रं॥12॥

पापाचारी सारमेय ने, जीवन्धर से मंत्र सुना।
महामंत्र को सुनने से ही, मरकर कुत्ता देव बना॥
प्रभु नाम के मंत्र जाप से पापी से पापी तिरते।
इसमें कुछ आश्चर्य नहीं वे, इन्द्र सरीखा पद लभते॥12॥

ॐ ह्रीं स्वर्ग लक्ष्मी प्रभुत्वकरण समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(13) रहस्य विद्या प्रदायक

शुद्धे ज्ञाने शुचिनि चरिते, सत्यपि त्वय्यनीचा,
भक्तिर्नो चेदनवधिसुखावञ्चिका कुञ्चिकेयम्।
शक्योद्घाटं भवति हि कथं मुक्तिकामस्य पुंसो-
मुक्तिद्वारं परिदृढ़महामोहमुद्राकवाटम्।।13।।

परम विशुद्ध ज्ञान चारित से, मोक्ष महल ना मिले कभी।
उत्तम भक्ति जो नर करते, प्रभुवर उसको मिले तभी।।
निर्मल ज्ञान चरण पाकर भी, गर भक्ति चाबी ना हो।
मुक्ति का पट खोल न पाये, यत्न भले कितना ही हो।।13।।

ॐ ह्रीं मुक्ति-द्वारोद् घाटनकारण समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(14) वाणी सिद्धि प्रदायक

प्रच्छन्नः खल्वयमघमयैरन्धकारैः समन्तात्-,
पन्था मुक्तेः स्थपुटितपदः क्लेशगर्तैरगाधैः।
तत्कस्तेन व्रजति सुखतो देव तत्त्वावभासी,
यद्यग्रेऽग्रे न भवति भवद्भारतीरत्नदीपः।।14।।

मोक्षमार्ग सब ओर ढ़का है, घोर पाप अंधियारे से।
दुःखरूपी गहरे गड्ढे से, आऊँगा उजियारे में।।
हे जिनवर ! तव वाणी से ही, सप्त तत्त्व को जाना है।
गमन करूँगा उसी मार्ग पे, जिसमें मोक्ष खजाना है।।14।।

ॐ ह्रीं मुक्ति पथावलोकन सामर्थ्य-प्रदायकाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(15) भय निवारक, आत्मशक्ति प्रदायक

आत्मज्योतिर्निधिरनवधि र्द्रष्टु रानन्द हेतुः,
कर्मक्षोणीपटलपिहितो योऽनवाप्यः परेषां।
हस्ते कुर्वन्त्यनति चिरतस्तं भवद्भक्तिभाजः
स्तोत्रैर्बद्ध प्रकृतिपरुषोद्दामधात्री खनित्रैः॥15॥

मोही मिथ्यात्वी प्राणी को, ज्ञाननिधि ना मिल सकती।
अष्ट कर्म से मुक्ति पाने, सम्यक्त्वी करते भक्ती॥
जैसे कोई कुदाल चलाकर, गढ़ा हुआ धन प्राप्त करें।
संस्तुति करके प्रभु आपकी, निजानंद निधि प्राप्त करें॥15॥

ॐ ह्रीं आत्मज्योति निधि प्रदान समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(16) जलाशय संबंधी बाधा निवारक

प्रत्युत्पन्ना, नयहिमगिरेरायता चामृताब्धे,
र्या देव त्वत्पदकमलयोः संगता भक्तिगङ्गा।
चेतस्तस्यां मम रुचिवशादाप्लुतं क्षालितांहः,
कल्माषं यद्भवति किमियं देव संदेह भूमि॥16॥

जिन हिमगिरी से प्रगट हुई है, स्याद्वाद नय की गंगा।
बड़े भाग्य से प्राप्त हुई है, नाथ भक्ति की ये गंगा॥
श्रद्धा से हम डुबकी लेते, पाप हरेगी ये गंगा।
संशय मन का दूर भगाकर, पा जाओ मुक्ति गंगा॥16॥

ॐ ह्रीं सर्वकल्मषक्षालन समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(17) ध्यान शक्ति प्रदायक

प्रादुर्भूतस्थिरपदसुख ! त्वामनुध्यायतो मे,
त्वय्येवाहं स इति मति रुत्पद्यते निर्विकल्पा।
मिथ्यैवेयं तदपि तनुते तृप्तिमभ्रेषरूपां,
दोषात्मानोऽप्यभिमतफलास्त्वत्प्रसादाद्भवन्ति॥17॥

स्थिर सुख जिनवर ने पाया, ऐसे प्रभु का ध्यान करें।
मैं भी जिनवर जैसा ही हूँ, मति में सोच असत्य धरें॥
मिथ्या होकर भी हे जिनवर !, वो निश्चय सुख प्राप्त करें।
तव प्रसाद से दोषरहित भी, इच्छित वस्तु प्राप्त करें॥17॥

ॐ ह्रीं सोऽहमिति मतिप्रदान समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(18) विद्या बुद्धि प्रदायक

मिथ्यावादं मलमपनुदन्सप्तभङ्गीतरङ्गै-
र्वागम्भोधिर्भुवनमखिलं देव ! पर्येति यस्ते।
तस्यावृत्तिं सपदि विबुधाश्चेत सैवाचलेन,
व्यातन्वन्तः सुचिरममृता सेवया तृप्नुवन्ति॥18॥

जिन समुद्र से निकली वाणी, सर्वलोक को पूत किया।
सप्त भंगमय जिन तरंग से, मिथ्यामल को दूर किया॥
मन मेरु से श्रुतसागर का, जो जन मंथन करता है।
वो भव्योत्तम जिनवर जैसा, शाश्वत अमृत वरता है॥18॥

ॐ ह्रीं परमामृत प्रदान समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(19) सुन्दर रूप प्रदायक

आहार्य्येभ्यः स्पृहयति परं यः स्वभावादहृद्यः,
शस्त्रग्राही भवति सततं वैरिणा यश्च शक्यः।
सर्वाङ्गेषु त्वमसि सुभगस्त्वं न शक्यः परेषां,
तत्किं भूषावसन कुसुमैः किं च शस्त्रैरुदस्त्रैः॥19॥

हे जिनवर ! जो हैं कुरूप वे, तन को अधिक सजाते हैं।
जो डरते हैं वे शस्त्रों से, झूठा रौब दिखाते हैं॥
जिन तुम अन्दर बाहर सुन्दर, अतः तुम्हें क्या वस्त्रों से ?
तुम अजातशत्रु परमेश्वर, नहीं प्रयोजन शस्त्रों से॥19॥

ॐ ह्रीं परम सुन्दर स्वरूप प्रदान समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(20) ऐश्वर्य प्रदायक, प्रभाव वृद्धिकारक

इन्द्रः सेवां तव सुकुरुतां किं तयाश्लाघनं ते,
तस्यैवेयं भवलयकरी श्लाघ्यता-मातनोति।
त्वं निस्तारी जननजलधेः सिद्धिकान्तापतिस्त्वं,
त्वं लोकानां प्रभुरिति तव श्लाघ्यते स्तोत्रमित्थं॥20॥

इन्द्र तिहारी पूजा करता, लाभ तुम्हें क्या पूजा से।
प्रभु पूजा भव भ्रमण मिटावे, यश कीर्ति का लाभ उसे॥
हे जिनवर ! तुम भवतारक हो, स्वयं तिरें सबको तारें।
मुक्तिवधु के तुम हो स्वामी, भक्त तुम्हें पूजे सारे॥20॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्य प्रभु-स्तुतिश्लाघनाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(21) वचन शक्ति प्रदायक

वृत्तिर्वाचामपरसदृशी न त्वमन्येन तुल्यः,
स्तुत्युद्गाराः कथमिव ततः स्त्वय्यमी न क्रमन्ते।
मैवं भूवंस्तदपि भगवन्भक्तिपीयूषपुष्टा-
स्तेभव्यानामभिमतफलाः पारिजाता भवन्ति॥21॥

अन्य मनुष्यों के जैसी है, हे प्रभुवर ! मेरी वाणी।
करूँ अर्चना हे जिन ! तेरी, कैसे पहुँचे मम वाणी॥
मम वाणी तुम तक ना, पहुँची फिर भी उत्तम कार्य करें।
सर्वश्रेष्ठ सुरतरु अमृत बन, मोक्ष सिद्धी अनिवार्य करें॥21॥

ॐ ह्रीं भव्य गणाभिमत फलप्रद समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(22) क्रोधशामक, क्लेश निवारक

कोपावेशो न तव न तव, क्वापि देव प्रसादो
व्याप्तं चेतस्तव हि परमोपेक्षयैवानपेक्षम्।
आज्ञावश्यं तदपि भुवनं सन्निधिर्वैरहारी,
क्वैवंभूतं भुवनतिलकं ! प्राभवं त्वत्परेषु॥22॥

हे जिनवर ! तुमको भक्तों पर, राग-द्वेष का भाव नहीं।
ना प्रसन्न होते भक्तों पे, वीतरागता यही सही॥
फिर भी जग तुम सन्निध पाकर, वैर विरोध मिटाता है।
तीन लोक के श्रेष्ठ तिलक का, यह प्रभाव दर्शाता है॥22॥

ॐ ह्रीं परमोपेक्षि-भुवनतिलक प्रभाव समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(23) सद्बुद्धि प्रदायक

देव स्तोतुं त्रिदिवगणिका मण्डली गीत कीर्तिं,
तोतूर्ति त्वां सकल विषय ज्ञानमूर्तिं जनो यः।
तस्य क्षेमं न पदमटतो, जातु जोहूर्ति पन्था-,
स्तत्त्वग्रन्थस्मरणविषयै नैष मोमूर्ति मर्त्यः॥23॥

देव-देवियाँ संस्तव द्वारा कीर्त्तन नृत्य भजन करते।
स्वपर प्रकाशी श्री जिनवर की, पूजा में तत्पर रहते॥
होता तब कल्याण जीव का, सरल मोक्ष पथ पा जाते।
तत्त्व ग्रंथ से मोक्ष पंथ पा, मोह जाल से बच जाते॥23॥

ॐ ह्रीं सकल तत्त्व ग्रंथ स्मरण विषयिबुद्धि प्रदान समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(24) अनंत सुख प्रदायक

चित्ते कुर्वन्निरवधिसुख ज्ञानदृग्वीर्य रूपं,
देव त्वां यः समयनियमादादरेण स्तवीति।
श्रेयोमार्ग स खलु सुकृती तावता पूरयित्वा,
कल्याणानां भवति विषयः पञ्चधा पञ्चितानां॥24॥

गुण अनंत के धारी प्रभु को, हृदय कमल में जो धारे।
त्रय संध्या में विनय भाव से, संस्तुति करते प्रभु द्वारे॥
वो निश्चय से भक्ति रचाकर, श्रेयमार्ग का पात्र बने।
पाँचों कल्याणक से पूजित, तीर्थंकर शुभ गात्र बने॥24॥

ॐ ह्रीं भाक्तिक जन पञ्चकल्याण प्रदान समर्थाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(25) मनवांछित कार्य सिद्धिदायक

(शार्दूलविक्रीड़ित छंद)

भक्तिप्रह्वमहेन्द्रपूजितपद ! त्वत्कीर्तने न क्षमाः,
सूक्ष्मज्ञानदृशोऽपि, संयमभृतः के हन्त मन्दावयम्।
अस्माभिः स्तवनच्छलेन तु परस्त्वय्यादरस्तन्यते
स्वात्माधीनसुखैषिणां स खलु नः कल्याणकल्पद्रुमः॥25॥

श्री जिनेन्द्र के पाद पद्म की, सुरगण भक्ति न कर पाये।
अवधि मनःपर्यय योगी भी, प्रभु के गुण न लिख पाये॥
आप गुणों से प्रीति कर जो, अनुपम संस्तव करता है।
कल्पतरु कल्याण लाभ पा, आत्म सुखों को वरता है॥25॥

ॐ ह्रीं सुखेच्छुक जन कल्याण कल्पद्रुमाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(26) कवित्व शक्ति प्रदायक

(स्वागता छंद)

वादिराजमनु शाब्दिक लोको, वादिराजमनु तार्किक सिंहः।
वादिराजमनु काव्यकृतस्ते, वादिराजमनु भव्यसहायः॥26॥

वादिराज मुनि सर्वलोक में, शब्द शास्त्र के ज्ञाता हैं।
मुनियों में मुनि वादिराज यति, तार्किक सिंह विधाता हैं॥
वादिराज की काव्य कुशलता, अद्भुत अतिशयकारी हैं।
वादिराज मुनि बने सहायक, भव्यों के उपकारी हैं॥26॥

ॐ ह्रीं श्री वादिराज सूरिकृत एकीभाव स्तोत्र स्वामिने श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (दोहा)

वादिराज मुनिराज ने, किया प्रभु का ध्यान।
कुष्ठ रोग से मुक्त हो, किया जगत् कल्याण।।
छब्बिस गाथा में रचा, एकीभाव विधान।
ऋषभदेव को पूजकर, पायें सौख्य महान।।

ॐ ह्रीं सर्व व्याधि दुःख-संकट, कुष्ठ रोग, चर्मरोग, केंसरादि, कोरोनादि रोग विनाशन समर्थाय आरोग्य, ऋद्धि-सिद्धि, सुख-शांति, समृद्धि, यश-कीर्ति, प्रज्ञा प्रदायकाय श्री आदिनाथ तीर्थंकर परमदेवाय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **जग में शांति ना मिले, शांति मिले प्रभु द्वार।**
शांतिकरण जगदीश पे, करता शांतिधार।।

शांतये शांतिधारा

दोहा- **कमलासन के मध्य में, बैठे प्रभुवर आप।**
कमल मनोज्ञ चढ़ा करूँ, प्रभुवर का मैं जाप।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र-(1) ॐ ह्रीं सर्व व्याधिविनाशन समर्थाय श्री ऋषभदेव तीर्थंकर परमदेवाय नमः स्वाहा। (2) ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

समुच्चय जयमाला

दोहा- **एकीभाव विधान की, जयमाला सुखमाल।**
ऋषभदेव को भेंट है, पुष्पों की ये माल।।

(चौपाई)

जय-जय आदिनाथ मनहारे, तीन लोक के चाँद सितारे।
दिनकर बनकर प्रभुवर आये, रोशन सारा जग हो जाये।।1।।

जो प्रभु को नित मन से ध्याये, दुःख संकट पीड़ा मिट जाये।
जिसने प्रभु को जहाँ पुकारा, उसको प्रभु ने दिया सहारा।।2।।

हरवादी का मान गलाये, वादिराज सूरी कहलाये।
जयसिंह राजा वा दरबारी, पूजा करती प्रजा तिहारी।।3।।

इक विद्वान् सभा में आया, गुरुवर का उपहास उड़ाया।
जैन धरम झूठा है राजा, झूठे हैं इनके मुनिराजा।।4।।

रोगी कुष्ठी उनकी काया, बदसूरत मुनि मन ना भाया।
जैन भक्त यह सह ना पाया, बोला मम गुरु कंचन काया।।5।।

भूपति ने दर्शन की ठानी, मुनि से श्रेष्ठी कहे कहानी।
जैनधर्म पे प्रश्न उठाया, गुरुवर ने तब धैर्य बँधाया।।6।।

वादिराज गुरु प्रभु को ध्याये, ऋषभदेव का ध्यान लगाये।
एकीभाव स्तोत्र बनाये, काया कंचन सम बन जाये।।7।।

जब गुरु चौथा छंद रचायें, गलित कुष्ठ तन का मिट जाये।
राजा संग श्रेष्ठी वन आया, गुरु तन चमक देख हर्षाया।।8।।

गुरु का तेज दूर तक फैला, लगा गुरु दर्शन को मेला।
गुरु को लख राजन चकराये, जैन मुनि ये ही कहलाये।।9।।

नरपति गुरु को शीश झुकाये, द्वेषी पे नृप कोप दिखाये।
राजा को मुनि सत्य बताते, कुष्ठ रोग की बात बताते।।10।।

छोटी अंगुली भी दिखलाये, कुष्ठ रोग उसमें दिखलाये।
जैन श्रमण सब ग्लान नहीं है, मंत्री को सद्ज्ञान नहीं है।।11।।

जैन धर्म का अतिशय मानो, ये जिन भक्ति का फल जानो।
एक रात में कुष्ठ मिटाया, मैंने भक्ति का फल पाया।।12।।

मुनि वाणी सुन सब हर्षाये, गुरु चरणों में सब झुक जाये।
क्षमा करो गुरु दोष हमारा, जैनधर्म सबने स्वीकारा।।13।।

जैन धर्म राजा स्वीकारे, समकित गुण से भाग्य संवारे।
वादिराज सूरी मन भाये, प्रभु भक्ति का मार्ग दिखाये॥14॥

जैन धर्म जिनगुरु की महिमा, उनके तप की जो है गरिमा।
एक रात में पाठ रचायें, अतिशय गुरु हमको दिखलायें॥15॥

ये विधान जो करे करावे, निश्चित अपने कष्ट मिटावे।
जो इसका व्रत विधि से पाले, सर्वश्रेष्ठ उत्तम सुख पाले॥16॥

प्रभु की गुण गाथा हम गाये, रोग-शोक से मुक्ति पाये।
त्रय गुप्ति से प्रभु को ध्यायें, 'आस्था' प्रभु को शीश झुकाये॥17॥

ॐ ह्रीं सर्व आधि-व्याधि संकट रोग-शोक, दुःख, अशांति, कोरोना वायरस, सर्व ज्वरादि रोगाल्प अपमृत्यु विनाशन समर्थाय सुख, शांति, आरोग्य, ऋद्धि-सिद्धि, धन-धान्य, केवलज्ञान लक्ष्मी प्रदायकाय श्री आदिनाथ तीर्थंकर परमदेवाय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

एकीभाव विधान करें हम, सर्व रोग विनशायें।
रहे निरोगी काय हमारी, जिनगुण निशदिन गायें॥
महिमा मंडित वादिभ सूरी, ज्ञानी गुरु को ध्यायें।
आदि प्रभु व वादि सूरी को, हम सब शीश झुकायें॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

आचार्य श्री वादिराज मुनिराज का अर्घ
(जोगीरासा छंद)

वादी प्रतिवादी सब हारे, वादिराज गुरु के आगे।
ओजस्वी गुरु की वाणी सुन, मिथ्यावादी सब भागे॥
ऐसे सूरी वादिराज को, वसु विधि द्रव्य चढ़ाता हूँ।
'आस्था' भक्ति युत गुरुवर को, झुक-झुक शीश नवाता हूँ॥

ॐ ह्रीं परम तपस्वी आचार्य श्री वादिराज महामुनिराज चरणेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रशस्ति

(दोहा)

ऋषभदेव से वीर तक, वंदन बारम्बार।
शांतिनाथ गणनाथ को, प्रणमु शत-शत बार।।1।।

पाँचों परमेष्ठी प्रभु, सरस्वती जग मात।
सर्व श्रमण के चरण की, भक्ति करें दिन-रात।।2।।

वादिराज सूरीश ने, रचना की सुखकार।
एकीभाव स्तोत्र ये, सब दुःख संकटहार।।3।।

कुंथु कनक गुरुराज का, मिला मुझे आशीष।
गुप्तिनंदी गुरुराज को, झुका रही मैं शीश।।4।।

माघबदी की चौदसी, आदिनाथ निर्वाण।
उस दिन ही प्रारम्भ कर, आदिनाथ विधान।।5।।

मुनिसुव्रत का जन्म तप, नवग्रह शांति विधान।
पानीपत में कर इति, एकीभाव विधान।।6।।

शब्द छंद का है नहीं, मुझ में प्रभु कुछ ज्ञान।
'आस्था' को बोधि मिले, पाऊँ केवलज्ञान।।7।।

।। इतिअलम्।।

आदिनाथ भगवान की आरती

(तर्ज – जय गणेश जय गणेश देवा..)

आदिनाथ आदिनाथ, आदिनाथ देवा।
दीप धूप आरती ले, भक्त करें सेवा।।

मात मरुदेवी लाल, नाभिनंद देवा।
आरती की थाल लेके, भक्त करे सेवा।।

1. स्वर्ण रत्न दीप लेके, द्वार तेरे आये।
मोतियों की थाल में ये, दीप चमचमाये।।
नृत्य भक्ति करके पावे, सौख्य शांति मेवा।
दीप धूप .....

2. नवरंगी लाख लाख, दीप हम सजायें।
रत्नमयी रंगमयी, ज्योत हम जलायें।।
आरती में झूम रहे, सर्व देवी–देवा।
दीप धूप .....

3. ज्ञान ज्योति पाने को ये, आरती तिहारी।
सर्व पाप ताप हरे, आरती तिहारी।।
'आस्था' को मोक्ष दीजे हे जिनेन्द्र देवा !
दीप धूप .....

***

एकीभाव विधान (आदिनाथ विधान) की आरती

(तर्ज – ॐ जय महावीर...)

ॐ जय आदिनाथा, स्वामी जय आदिनाथा।
आरती करते हम सब, झुका रहे माथा।। ॐ जय आदिनाथा...

1. ऋषभदेव है नाम तुम्हारा, ऋषियों के स्वामी–2 हो स्वामी..
ऋषि मुनि तव गुण गाये, दुःख मेटो स्वामी...
ॐ जय आदिनाथा...

2. वादिराज मुनिवर के तन में, कोड़ हुआ भारी–2 हो स्वामी..
एकीभाव से तत्क्षण, मिटी व्याधि सारी।।
ॐ जय आदिनाथा...

3. वादिराज मुनिवर की काया, सोने सी चमके–2 हो स्वामी..
चमत्कार लख राजा, गुरुवर को नमते।।
ॐ जय आदिनाथा...

4. इस विधान को जो भी करता, सुख संपत्त पावे–2 हो स्वामी..
'आस्था' से हम भविजन, गुण कीर्त्तन गावे।।
ॐ जय आदिनाथा...

***

अर्घावली

श्री जिनवाणी माता

(चामर छंद)

नीर गंध वस्त्र आदि अर्घ भाव से लिया।
आपका विधान मात भक्ति भाव से किया।।
दिव्य देशना महान है जिनेश आपकी।
मात अर्चना हरे प्रवंचना विभाव की।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीवाग्वादिनीभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री गणाधिपति गणधर भगवान का अर्घ

(नरेन्द्र छंद)

कर्म अष्ट से लड़ने हेतु वेष दिगम्बर धार लिया।
क्षायिक पद की अभिलाषा से कर्म अरि पर वार किया।।
जल फल आदि आठ द्रव्य से करता प्रभु का अभिनंदन।
मुनिगण के स्वामी हैं गणधर उनका मैं करता अर्चन।।

ॐ ह्रीं श्री सर्वगणधर परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग. गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी

(शेर छंद)

आचार्य कुंथु सिंधु हैं वात्सल्य दिवाकर।
हम धन्य-धन्य आज उनको अर्घ चढ़ाकर।।
जिनधर्म का डंका बजाना जिनका है धरम।
भक्ति से भक्त बोलो वंदे कुंथुसागरम्।।

ॐ ह्रीं गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी

(जोगीरासा छंद)

कनकनंदी की ज्ञान रश्मियाँ ज्ञान किरण फैलाये।
वैज्ञानिक आचार्य हमारे सबको धर्म सिखाये।।
साम्य भाव ही सुख स्वभाव है यही गुरु बतलाये।
कनक रजत की थाल सजाकर गुरु को अर्घ चढ़ाये।।

ॐ ह्रीं वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रज्ञायोगी आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव का अर्घ

(1) (शेर छंद)

आचार्य गुप्तिनंदी ने, कमाल कर दिया।
वात्सल्य से सभी को, मालामाल कर दिया।।
गुरुदेव मुस्कुराके, आशीर्वाद दीजिये।
पूजा हमारी आप ये, स्वीकार कीजिये।।

ॐ ह्रीं परम पूज्य आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(2) (तर्ज - माईन-माईन....)

प्रज्ञायोगी गुप्तिनंदी, महाकवि गुणधारी।
आर्ष मार्ग की राह बतायें, जय हो गुरु तुम्हारी।।
बोलो गुप्तिनंदी की जय, बोलो कविहृदय की जय।
बोलो महाकवि की जय, बोलो धर्म सूर्य की जय।।
नीर गंध अक्षत पुष्पादि, अष्ट द्रव्य हम लाये।
कुंथु कनकनंदी के नंदन, तुमको अर्घ चढ़ायें।।
धर्म तीर्थ के प्रेरक गुरुवर-2, जन-जन के उपकारी।
हम सब तुमको शीश झुकायें, जय हो गुरु तुम्हारी।
बोलो गुप्तिनंदी की जय.....

ॐ ह्रीं परम पूज्य प्रज्ञायोगी, आर्षमार्ग संरक्षक, कविहृदय, धर्मक्रांति सूर्य, ज्ञान दिवाकर, व्याख्यान वाचस्पति, श्रावक संस्कार उन्नायक, महाकवि आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय अर्घ

(शेर छंद)

मैं पूजता अरिहंत सिद्ध सूरि को सदा।
उवज्झाय सर्व साधु और शारदा मुदा।।
गणधर गुरु चरण की नित्य अर्चना करूँ।
दश धर्म सोलह भावना की अर्चना करूँ।।1।।

अरहंत भाषितार्थ दया धर्म को भजूँ।
श्री तीन रत्न रूप मोक्ष धर्म को जजूँ।।
त्रैलोक्य के कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य को ध्याऊँ।
चैत्यालयों का ध्यान लगा अर्घ चढ़ाऊँ।।2।।

सब सिद्ध क्षेत्र तीर्थ क्षेत्र को भजूँ सदा।
औ तीन लोक के समस्त तीर्थ सर्वदा।।
चौबीस जिनवरों व बीस नाथ को ध्याऊँ।
जल आदि अष्ट द्रव्य ले पूर्णार्घ चढ़ाऊँ।।3।।

दोहा : जल आदिक वसु द्रव्य की, लेकर आये थाल।
महाअर्घ अर्पण करें, प्रभु को नमें त्रिकाल।।

ॐ ह्रीं द्रव्य सहित भावपूजा भाववंदना त्रिकाल पूजा त्रिकाल वंदना करे करावै भावना भावै श्री अरहंतसिद्ध आचार्य उपाध्यायसर्वसाधु पंच परमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग करणानुयोग चरणानुयोग द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि दशलाक्षणिकधर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः। विदेह क्षेत्रस्थ विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। जल, थल, आकाश, गुफा, पहाड़, सरोवर, नगर-नगरी, ऊर्ध्वलोक, मध्यलोक, अधोलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः। पाँच भरत पाँच ऐरावत संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनराजेभ्यो नमः। नंदीश्वर द्वीप संबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। पंचमेरू संबंधी

अस्सी जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर, कैलाशगिरी, चंपापुर, पावापुर, गिरनार, सोनागिर, मथुरा, गजपंथा, मांगीतुंगी, तपोभूमि आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री, मूढ़बद्री, देवगढ़, चंदेरी, पपौरा, हस्तिनापुर, अयोध्या, कुंथुगिरी, पुष्पगिरी, अंजनगिरी, धर्मतीर्थ, वरूर,राजगृही, तारंगा, चमत्कार, महावीरजी, पदमपुरा, तिजारा, अहिच्क्षेत्र, कचनेर, जटवाड़ा, पैठण, गोम्मटेश्वर, चंवलेश्वर, बिजौलिया, चांदखेड़ी, पाटन, कुण्डलपुर, अणिन्दा वृषभदेव णमोकार ऋषि तीर्थ आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारण ऋद्धिधारी सप्त परमर्षिभ्यो नमः। भूत–भविष्यत–वर्तमान काल संबंधी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवंतं कृपावंतं श्री वृषभादि महावीरपर्यंतं चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारत देशे..... प्रान्ते–नगरे..... मासानांमासे.....मासे.....पक्षे.....तिथौ.....वासरे मुनि आर्यिकाणां श्रावक श्राविकाणां, क्षुल्लक, क्षुल्लिकानां, सकल कर्मक्षयार्थं (जलधारा) जलादि महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(27 श्वासोच्छवास में 9 बार णमोकार मंत्र पढ़ें।)

शांतिपाठ (हिन्दी)

चौपाई

(शांतिपाठ बोलते समय पुष्पाञ्जलि क्षेपण करते रहें)

शशि सम निर्मल जिन मुखधारी, शील सहस्र गुणों के धारी।
लक्षण वसु शत त्रयपदधारी, कमल नयन शांति सुखकारी॥1॥

(नोट–यहाँ शांतिधारा करें।)

शांतिनाथ पंचम चक्रीश्वर, पूजें तुमको इन्द्र मुनीश्वर।
शांति करो हे शांति ! जिनेश्वर, जगत् शांतिहित नमते गणधर॥2॥

आठों प्रातिहार्य मनहारी, ये जिन वैभव हैं सुखकारी।
तरु अशोक पुष्पों की वर्षा, दिव्य ध्वनि सिंहासन रवि सा॥3॥

छत्र चँवर भामंडल चम–चम, देव–दुंदुभि बजती दुम–दुम।
शांति करो त्रय जग में स्वामी, शीश झुकाता तुमको स्वामी॥4॥

आप अनंत चतुष्टय धारी, मंगल द्रव्य आठ अघहारी।
सर्व विघ्न प्रभु आप नशाओं, हे शांति प्रभु ! शांति दिलाओ॥5॥
पूजक राजा शांति पायें, मुनि तपस्वी शांति पायें।
राष्ट्र नगर में शांति छाये, शांति जगत् में हे जिन ! आये॥6॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् (9 बार णमोकार मंत्र का जाप करें।)

(दोनों हाथ में चावल या पुष्प लेकर करबद्ध हो विसर्जन पाठ पढ़ें मंत्र के साथ पुष्पाञ्जलि करें)

विसर्जन पाठ

(दोहा)

जाने अनजाने हुई, प्रभु पूजा में चूक।
मैं अज्ञान अबोध हूँ, क्षमा करो सब चूक॥1॥
जानूँ नहीं आह्वान मैं, पूजा से अनजान।
ज्ञान विसर्जन का नहीं, क्षमा करो भगवान॥2॥
अक्षर पद और मात्रा, व्यंजनादि सब शब्द।
कम ज्यादा कुछ कह दिया, छूट गये हों शब्द॥3॥
मिथ्या हो सब दोष मम, शरण रखो भगवान।
तव पूजा करके प्रभु, बन जाऊँ भगवान॥4॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं अस्मिन् नित्य पूजाभिषेक विधाने आगच्छत सर्वे देवाः स्वस्थाने गच्छतः-3जः-3स्वाहा।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(9 बार णमोकार का जाप करें।)

(नोट-दीपक लेकर श्रीजी की मंगल आरती करें।)

(यह दोहा बोलते हुए आशिका ग्रहण करें)

दोहा : गंध पुष्प प्रभु रज यही, इसको शीश झुकाय।
पुष्प लिये आह्वान के, अपने शीश लगाय॥

(तुभ्यम् नमस्त्रि बोलते हुये भगवान को गुरु को नमस्कार करें।)

***

श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन

अतिशय क्षेत्र धर्मतीर्थ, जिला औरंगाबाद (महाराष्ट्र) द्वारा

आर्ष मार्ग संरक्षक, कवि हृदय, प्रज्ञायोगी, दिगम्बर जैनाचार्य

श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव ससंघ का प्रकाशित साहित्य

1. श्री रत्नत्रय आराधना
2. श्री लघु रत्नत्रय आराधना
3. श्री वृहद् रत्नत्रय विधान
4. श्री लघु रत्नत्रय विधान
5. श्री रत्नत्रय भक्ति संहिता
6. श्री रत्नत्रय संस्कार प्रवेशिका (भाग 1)
7. श्री रत्नत्रय संस्कार प्रवेशिका (भाग 2)
8. श्री वृहद गणधर वलय विधान
9. लघु गणधर वलय विधान
10. श्री वृहद नवग्रह शान्ति विधान
11. श्री सूर्यग्रह शान्ति विधान (श्री पद्मप्रभु आराधना)
12. श्री चन्द्रग्रह शान्ति विधान (श्री चन्द्रप्रभु आराधना)
13. श्री मंगलग्रह शान्ति विधान (श्री वासुपूज्य आराधना)
14. श्री बुधग्रह शान्ति विधान (श्री शांतिनाथ आराधना)
15. श्री गुरुग्रह शान्ति विधान (श्री आदिनाथ आराधना)
16. श्री शुक्रग्रह शान्ति विधान (श्री पुष्पदंत आराधना)
17. श्री शनिग्रह शान्ति विधान (श्री मुनिसुव्रतनाथ आराधना)
18. श्री राहूग्रह शान्ति विधान (श्री नेमिनाथ आराधना)
19. श्री केतुग्रह शान्ति विधान (श्री पार्श्वनाथ आराधना)
20. धर्मसूर्य श्री पद्मप्रभ-वासुपूज्य-नेमिनाथ विधान
21. श्री नवग्रह शान्ति चालीसा (बड़ी)
22. श्री नवग्रह शान्ति चालीसा (छोटी)
23. श्री पंचकल्याणक विधान
24. श्री त्रिकाल चौबीसी (लक्ष्मी प्राप्ति) रोट तीज विधान
25. श्री तीस चौबीसी (महालक्ष्मी प्राप्ति) विधान
26. श्री सर्व तीर्थंकर विधान
27. श्री विजय पताका विधान
28. श्री सम्मेद शिखर विधान
29. श्री पंच परमेष्ठी (सर्व सिद्धि) विधान
30. श्री विद्या प्राप्ति विधान
31. श्री श्रुत स्कन्ध विधान
32. श्री तत्त्वार्थ सूत्र विधान
33. श्री भक्तामर विधान
34. श्री कल्याण मंदिर विधान
35. श्री एकीभाव विधान
36. श्री विषापहार विधान
37. श्री णमोकार विधान
38. श्री जिन सहस्त्रनाम विधान
39. श्री चौबीस तीर्थंकर, लक्ष्मी प्राप्ति बाहुबली-धर्मतीर्थ एवं आचार्य गुप्तिनंदी विधान

40. श्री चन्द्रप्रभु विधान
41. श्री शान्तिनाथ विधान
42. श्री सर्व दोष प्रायश्चित्त विधान
43. श्री रविव्रत विधान
44. श्री पंचमेरु-दशलक्षण-सोलहकारण विधान
45. श्री नंदीश्वर विधान
46. श्री चन्दन षष्टी व्रत विधान
47. आचार्य शांतिसागर विधान
48. आचार्य श्री कुन्थुसागर विधान
49. आचार्य श्री कनककनंदी विधान
50. आचार्य श्री गुप्तिनंदी विधान
51. श्री छ्यानवे क्षेत्रपाल विधान
52. श्री भैरव पद्मावती विधान
53. श्री धर्मतीर्थ आरती संग्रह
54. सावधान (काव्य संग्रह)
55. महासती अंजना
56. कौडियो में राज्य
57. महासती मनोरमा
58. महासती चन्दनबाला
59. विलक्षण ज्ञानी (आचार्य श्री कनककनंदी जी चरित्र कथा)
60. वात्सल्य मूर्ति (गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी स्मारिका)
61. धर्मतीर्थ प्रवेशिका (भाग-1)